



बस्तर गोंचा पर्व 2026: आज नेत्रोत्सव पर तुपकी से भगवान जगन्नाथ को सलामी

जगदलपुर। 360 आरण्यक ब्राम्हण समाज द्वारा मनाये जाने वाले गोंचा महापर्व की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है। 15 जुलाई से शुरू होकर यह पर्व 25 जुलाई तक चलेगा। 360 आरण्यक ब्राम्हण समाज के अध्यक्ष वेद प्रकाश पंडे ने बताया कि 15 जुलाई को नेत्रोत्सव के बाद 10 दिनों तक लगातार इस पर्व को मनाया जाता है। भगवान जगन्नाथ की प्रतिमा को आदिवासियों द्वारा बनाए गए नए रथ में बिठाकर शहर का भ्रमण कराया जाता है। बस्तर के ग्रामीणों द्वारा बनाई गई बांस की तुपकी से भगवान जगन्नाथ को सलामी दी जाती है। बस्तर के विश्व प्रसिद्ध दशहरा पर्व के बाद गोंचा पर्व को दूसरे बड़े पर्व का दर्जा दिया

बस्तर में राशनकार्ड ई केवाईसी की अंतिम चेतावनी, नाम कटने का खतरा

जगदलपुर। बस्तर जिले में राशन कार्डधारकों के लिए बड़ी खबर है। जिले के 83 हजार 485 हितग्राहियों का ई केवाईसी अब तक पूरा नहीं हुआ है। खाद्य विभाग ने स्पष्ट कर दिया है कि 15 जुलाई 2026 के बाद ई-केवाईसी की समय सीमा नहीं बढ़ाई जाएगी। ऐसे में सत्यापन नहीं कराने वाले हितग्राहियों के नाम राशन कार्ड से हटाने की प्रक्रिया शुरू हो सकती है। यह अभियान पारदर्शिता लाने और वास्तविक जरूरतमंदों तक राशन पहुंचाने के लिए चलाया जा रहा है। बस्तर जिले में ई-केवाईसी की धीमी रफ्तार अब हजारों परिवारों के लिए चिंता का विषय बन गई है। कई हितग्राही पिछले कई महीनों से राशन से वंचित हैं और अब उनके राशन कार्ड से नाम कटने का खतरा भी मंडरा रहा है।सहायक खाद्य अधिकारी दिव्यारानी कार्यान्त के अनुसार

जो भी हितग्राही ई केवाईसी नहीं करा पाएंगे उनका राशन कार्ड से नाम कटेगा। ई-केवाईसी नहीं होने के पीछे कई कारण सामने आए हैं। इनमें फिंगरप्रिंट का मैच नहीं होना, राशन कार्ड में गलत जानकारी, परिवार के सदस्य की मृत्यु के बाद रिकॉर्ड अपडेट नहीं होना, शादी के बाद नाम परिवर्तन नहीं होना और जागरूकता की कमी प्रमुख हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए उचित मूल्य दुकानों, पंचायतों और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के माध्यम से लगातार अभियान चलाया जा रहा है। खाद्य विभाग ने हितग्राहियों से अपील की है कि वे अंतिम तिथि का इंतजार न करें और जल्द से जल्द अपनी ई-केवाईसी पूरी कराएं। निर्धारित समय के बाद नाम हटने पर राशन का लाभ मिलने में परेशानी हो सकती है।

संलिप्त शिक्षकों पर अब तक क्या कार्रवाई हुई: एचसी

बिलासपुर। हाईकोर्ट ने महासमुंद जिले के भंवरपुर स्थित स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय में 12वीं की बोर्ड परीक्षा के दौरान हुए नकल कांड और एक छात्रा द्वारा किए गए साहसी स्टिंग ऑपरेशन को गंभीरता से लिया है। छात्रा की बहादुरी और मीडिया में आई खबरों को लेकर चीफ जस्टिस जस्टिस रमेश सिन्हा और रविंद्र कुमार अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने इस मामले को जनहित याचिका के रूप में सुनवाई शुरू की है। अदालत ने छत्तीसगढ़ शासन के स्कूल शिक्षा सचिव को नोटिस जारी कर इस पूरे प्रकरण पर शपथ पत्र के साथ जवाब तलब किया है। कोर्ट ने पूछा है कि मीडिया में जिन शिक्षकों के नाम नकल कराने में संलिप्त पाए गए हैं, उन पर अब तक क्या दंडात्मक कार्रवाई की गई है। शिक्षा विभाग की ओर से

भिलाई के आत्मानंद स्कूल में तीन दिन में 8 छात्राएं बेहोश

दुर्गा भिलाई के खम्हरिया स्थित स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम स्कूल में छात्राओं की अचानक तबीयत बिगड़ने का मामला चर्चा का विषय बना हुआ है। पिछले तीन दिनों में कक्षा 9वीं-ए की आठ छात्राएं अचानक चीखने-चिल्लाने लगीं, उनके हाथ-पैर अकड़ गए, कुछ रोने लगीं और फिर बेहोश हो गईं। सभी छात्राओं को अस्पताल ले जाया गया, जहां अधिकांश की मेडिकल रिपोर्ट सामान्य आई है।

जानकारी के मुताबिक, यह सिलसिला 9 जुलाई से शुरू हुआ। स्कूल की प्राचार्य सुनीता दीवान के अनुसार, सबसे पहले एक छात्रा को चक्कर आया। उसे स्टॉफ रूम ले जाया गया, तभी दूसरी



मामले में तीन महीने में विभागीय जांच पूरी कर कार्रवाई करने की बात कही गई है। मामले की अगली सुनवाई अक्टूबर माह के पहले हफ्ते में होगी।

मामला महासमुंद जिले के बसना ब्लॉक के रोहिणी गांव की छात्रा नीता जगत के साहस से जुड़ा है। सरस्वती शिशु मंदिर की



छात्रा अचानक जोर-जोर से चीखने लगी। कुछ ही देर में तीन और छात्राओं की तबीयत बिगड़ गई।इनके हाथ-पैर अकड़ गए, आंखों से आंसू निकलने लगे और उन्हें बोलने में भी परेशानी होने लगी। 108 एंबुलेंस के पहुंचने में समय लागने की जानकारी मिलने पर सभी छात्राओं को ऑटो से शंकराचार्य मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, जहां करीब डेढ़ घंटे बाद उनकी हालत सामान्य हो

गई। डॉक्टरों की जांच में किसी गंभीर शारीरिक बीमारी की पुष्टि नहीं हुई। इसके बाद 11 जुलाई को दो और छात्राओं की तबीयत इसी तरह बिगड़ी। एक को अस्पताल ले जाया गया, जबकि दूसरी स्कूल में ही कुछ देर बाद सामान्य हो गई। सोमवार को फिर दो छात्राएं इसी तरह को परेशानी का शिकार हुईं, इनमें से एक छात्रा में सिकल सेल से जुड़ी समस्या सामने आई।

9 महीने से बंद है राशन, ई केवाईसी नहीं करने वालों को विभाग की अंतिम चेतावनी

कांकेर। उत्तर बस्तर कांकेर जिले के करीब 62 हजार 907 हितग्राही पिछले 9 महीनों से सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के तहत मिलने वाले राशन से वंचित हैं। इसकी मुख्य वजह इन हितग्राहियों द्वारा अब तक ई-केवाईसी की प्रक्रिया पूरी नहीं करना है। खाद्य विभाग ने ई-केवाईसी के लिए कई बार समय सीमा बढ़ाने के साथ जागरूकता अभियान भी चलाए, लेकिन बड़ी संख्या में लोग अब भी प्रक्रिया पूरी नहीं करा सके हैं। अब विभाग ने साफ कर दिया है कि 15 जुलाई 2026 ई-केवाईसी की अंतिम तिथि है और इसके बाद समय सीमा नहीं बढ़ाई जाएगी। खाद्य विभाग के अनुसार, निर्धारित समय के भीतर ई-केवाईसी नहीं कराने वाले सदस्यों के नाम राशन कार्ड से हटाए जा सकते हैं। इसके बाद वे शासन की खाद्यान्न योजना का लाभ नहीं ले सकेंगे। खाद्य विभाग का कहना है कि ई-केवाईसी का उद्देश्य राशन वितरण प्रणाली को अधिक पारदर्शी बनाना, रिकॉर्ड को अद्यतन करना तथा मृत, अपात्र और डुप्लीकेट हितग्राहियों के नाम हटाकर वास्तविक पात्र लोगों तक योजना का लाभ पहुंचाना है।हालांकि, सबसे बड़ा सवाल यह है कि अब केवल एक दिन का समय शेष है और जिले के 62907 हजार लोगों का ई-केवाईसी कराया जाना बाकी है। ऐसे में यदि समय रहते प्रक्रिया पूरी नहीं हुई तो हजारों परिवार सरकारी राशन से वंचित हो सकते हैं।

छत्तीसगढ़
प्रमुख समाचार

साइबर ठगों को म्यूल अकाउंट उपलब्ध कराना पड़ा महंगा

दंतेवाड़ा। पुलिस ने बैंक खाता किराए पर देकर साइबर ठगी की रकम के अवैध लेन-देन में सहयोग करने वाले दो म्यूल अकाउंट धारकों को गिरफ्तार किया है। जांच में दोनों आरोपियों के बैंक खातों में 5 लाख 29 हजार 898 के संदिग्ध वित्तीय लेन-देन का खुलासा हुआ है। पुलिस ने दोनों के खिलाफ बीएनएस की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर उन्हें न्यायालय में पेश किया, जहां से न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया। पुलिस के अनुसार साइबर अपराधी ठगी की रकम को एक खाते से दूसरे खाते में भेजने के लिए ऐसे बैंक खातों का उपयोग करते हैं, जिन्हें म्यूल अकाउंट कहा जाता है। खाताधारकों को कमीशन का लालच देकर उनके बैंक खाते, पासबुक, चेकबुक और एटीएम कार्ड किराए पर लिए जाते हैं। बाद में इन्हीं खातों के माध्यम से ठगी की रकम का लेन-देन और निकासी की जाती है। पुलिस अधीक्षक चंद्र मोहन सिंह के मार्गदर्शन में जिले में साइबर अपराधियों और उनके नेटवर्क के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है।

पैरामेडिकल संस्थान के खिलाफ प्रशासनिक जांच थुरु

सूरजपुर। निजी पैरामेडिकल संस्थान पर छात्रों से फीस लेने के बाद भी परीक्षा नहीं लेने का आरोप लगा है।इस मामले में अब प्रशासन ने संत्राज लिया है। कलेक्टर के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग की तीन सदस्यीय जांच टीम गठित की गई है, जिसने तिलसिंवा स्थित गुरुकुल पैरामेडिकल संस्थान पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। छात्रों का आरोप है कि संस्थान ने सैकड़ों विद्यार्थियों से मोटी फीस वसूलने के बाद परीक्षा नहीं कराई। यही नहीं बाद में संस्थान भी बंद कर दिया, जिससे उनका भविष्य अधर में लटक गया। इस मामले को ईटीवी भारत के प्रमुखता से उठाए जाने के बाद प्रशासन हरकत में आया और अब जांच की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। संस्था ने बच्चों को डीएमएलटी समेत दूसरे कोर्स में डिप्लोमा देने का वादा किया था।इसके ऐवज में छात्रों से फीस ली गई थी लेकिन फीस लेने के बाद भी एग्जाम नहीं करवाया।इसकी शिकायत परमेश्वर राजवाड़े ने कलेक्टर से की थी। इसके बाद कलेक्टर के निर्देश पर अब जांच की जा रही है।

भिलाई में भीषण आग, दो मंजिला इमारत में आगजनी

दुर्ग। भिलाई नगर के रामनगर इलाके में एक दो मंजिला इमारत में अचानक आग लगने से इलाके में अफरा-तफरी मच गई। इमारत के ग्राउंड फ्लोर पर दुकान संचालित होती है, जबकि ऊपरी मंजिल पर परिवार रहता है। आग की तेज लपटें और धुआं उठता देख आसपास के लोगों में दहशत फैल गई। हालात इतने गंभीर हो गए कि जान बचाने के लिए कुछ लोगों को बालकनी से नीचे कूदना पड़ा। घटना के दौरान स्थानीय लोगों ने साहस और सूझबूझ का परिचय देते हुए बिना समय गंवाए आग बुझाने का प्रयास शुरू कर दिया। युवाओं ने बाट्लियों और नल के पाइपों की मदद से लगातार पानी डालकर आग को फैलने से रोका। वहीं कुछ लोगों ने अपनी जान जोखिम में डालकर बालकनी तक पहुंचकर घर में रखा सामान और रसोई गैस सिलेंडर सुरक्षित बाहर निकाला, जिससे बड़ा हादसा टल गया। सूचना मिलते ही पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची। हालांकि स्थानीय लोगों की तत्परता के चलते दमकल कर्मियों के पहुंचने से पहले ही आग पर काफी हद तक काबू पा लिया गया था।

धमतरी में रेत माफियाओं पर खनिज विभाग का शिकंजा

धमतरी। जिले में अवैध रेत उत्खनन और परिवहन के खिलाफ खनिज विभाग ने कार्रवाई तेज कर दी है। लगातार मिल रही शिकायतों के बाद विभाग ने दो दिनों तक कई इलाकों में सघन जांच अभियान चलाकर अवैध रेत परिवहन में लगे 4 वाहनों को जब्त किया है। सभी वाहनों के खिलाफ खान एवं खनिज अधिनियम और छत्तीसगढ़ गौण खनिज नियमों के तहत कार्रवाई की जा रही है। खनिज विभाग के मुताबिक 12 और 13 जुलाई को ग्राम सारंगपुरी, खरेंगा, अमेठी, सरगी-दोनर, पाहंदा सहित आसपास के क्षेत्रों में उड़नदस्ता दल ने दबिश दी। जांच के दौरान अवैध रूप से रेत का परिवहन करते पाए गए 4 वाहनों को मौके पर ही जब्त कर लिया गया। कलेक्टर अविनाश मिश्रा ने बताया कि जिले में खनिजों के अवैध उत्खनन, परिवहन और भंडारण पर प्रभावी रोक लगाने के लिए लगातार निगरानी और सघन कार्रवाई की जा रही है। शिकायत मिलते ही खनिज विभाग की टीम तत्काल मौके पर पहुंचकर जांच करती है।

पुल से हवा में उछलकर 30 फीट नीचे गिरी कार

बिलासपुर। बिलासपुर उरगा मार्ग पर निर्माणाधीन भारतमाला हाइवे में सोमवार रात बड़ा हादसा हो गया।तोरवा थाना क्षेत्र के दर्राघाट-ढेंका करी के पास अरपा नदी पर बन रहे अधूरे पुल से एक तेज रफ्तार टाटा नेक्सन कार (CG 13 AS 9262) करीब 30 फीट नीचे जा गिरी। हादसे में कार सवार चार युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी कोरबा से बिलासपुर की ओर आ रहे थे। तोरवा थाना प्रभारी रजनीश सिंह ने बताया कि रात करीब 8 बजे हादसे की सूचना मिली। जिस स्थान पर दुर्घटना हुई, वहां पुल का निर्माण कार्य अभी अधूरा है और आगे सड़क भी नहीं जुड़ी है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार कार सवारों को इसकी जानकारी नहीं थी। तेज रफ्तार के कारण कार सीधे निर्माणाधीन हिस्से तक पहुंच गई और पुल के अधूरे सिरे से हवा में उछलते हुए करीब 30 फीट नीचे जा गिरी। हादसे की तेज आवाज सुनकर आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे और तत्काल पुलिस को सूचना दी। पुलिस टीम ने स्थानीय लोगों की मदद से कार में फंसे चारों युवकों को बाहर निकाला।

20 साल से बीमार महिला की मदद के लिए पहुंचे जिप अध्यक्ष



गरियाबंद। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले से इंसायित को झकझोर देने वाला मामला सामने आया है।

धीगियामुड़ा गांव में 48 वर्षीय हीरा बाई नेताम पिछले करीब 20 वर्षों से हाथ और पैरों की गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं। लंबे समय तक इलाज कराने के बावजूद जब उनकी हालत में सुधार नहीं हुआ, तो गांव में इसे खूत की बीमारी मान लिया गया। अंधविश्वास इतना हावी हुआ कि परिवार ने भी सामाजिक दबाव में आकर महिला को गांव से करीब

आधा किलोमीटर दूर खेत में बनी झोपड़ी में रहने के लिए छोड़ दिया। पीड़िता के पति नरसिंह नेताम ने बताया कि उनकी पत्नी लंबे समय से पैरों में सूजन और हाथों में घाव से पीड़ित हैं। कई बार इलाज कराने के बावजूद बीमारी ठीक नहीं हुई। आर्थिक और मानसिक परेशानियों के कारण करीब एक साल पहले इलाज भी बंद कर दिया गया। धीरे-धीरे हाथ-पैरों में सूजन बढ़ गई, फोड़े हो गए और असहनीय दर्द के कारण हीरा बाई लगातार कराहती रहती थी।

ऊर्जाधानी में रेल यात्रियों का सफर मुश्किल लोकल और एक्सप्रेस सभी ट्रेनें लेट



विद्यार्थी रोज की देरी से परेशान रहते हैं। इसी तरह गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए बड़े शहरों के हॉस्पिटल में जाने वाले मरीज और उनके परिजनों के लिए यह देरी जानलेवा साबित हो सकती है। लोग तलाश लेते हैं दूसरे विकल्प ट्रेनों की लेट लतीफी के कारण लोग दूसरा विकल्प तलाश लेते हैं सिर्फ कोरबा से छूटने वाली ट्रेन ही लेट नहीं रहती, बल्कि यहां पहुंचने के मामले में भी ट्रेन अक्सर लेट हैं। हसदेव एक्सप्रेस एक ऐसी ट्रेन है, जिससे आम आदमी एक दिन में रायपुर जाकर फिर वापस आ सकता है। लेकिन यह ट्रेन भी समय से नहीं चल रही है। अक्सर यह ट्रेन अपने निर्धारित समय से दो या तीन घंटे देरी से कोरबा के रेलवे स्टेशन पहुंचती है। ट्रेनों की बिगड़ी चल के कारण लोग दूसरे विकल्प तलाश रहे हैं। रेल प्रशासन को नहीं दिखती यात्रियों की पीड़ा रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों का अक्सर यह तर्क होता है कि लाइन क्षमता का

अभाव है। कई तकनीकी कारण भी गिन जाते हैं। दरअसल कोरबा से प्रतिदिन लगभग 45 से 50 रैक कोयला डिस्पैच किया जाता है। जो देश के अलग-अलग हिस्सों के पावर प्लांट को प्रदान किया जाता है। ताकि ऊर्जा की जरूरत को पूरा किया जा सके। लेकिन सवाल यह उठता है कि जब 7 हजार करोड़ का राजस्व इसी पटरी से आता है, तो बुनियादी ढांचे के विस्तार के लिए आवश्यक बजट और प्राथमिकता क्यों नहीं दी जा रही? पिछले कई वर्षों से कोरबा-धरमजयगढ़ रेल परियोजना और स्थानीय स्टेशनों के आधुनिकीकरण के बड़े-बड़े बजट किए गए, लेकिन धरातल पर बदलाव नदारद है। कोरबा के जागरूक नागरिक अब आंदोलन की तैयारी में हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अभियान तेजी से बढ़ रहा है। स्थानीय नागरिक संघ का कहना है कि यात्री ट्रेनों को मालगाड़ियों के पीछे न खड़ा किया जाए। ट्रेनों की समयबद्धता सुनिश्चित की जाए।

भटगांव के शिक्षक कृष्ण कुमार की अनोखी पहल

सार' गढ़ -बिलाई गढ़। छत्तीसगढ़ के सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले में शिक्षा के प्रति समर्पित शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भटगांव में पदस्थ शिक्षक कृष्ण कुमार कुर्ने लगातार 10 वर्षों से छात्राओं के हित में निःस्वार्थ सेवा कार्य कर रहे हैं। उनके द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमंद छात्राओं को हर साल निःशुल्क पुस्तक, परीक्षाबोध, परीक्षासार, गाइड एवं अन्य अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

इस साल भी इस अभियान के अंतर्गत शिक्षक कृष्ण कुमार कुर्ने ने कक्षा 11वीं के 22 स्टूडेंट्स एवं 12वीं की 25 छात्राओं को



जीवविज्ञान, गणित, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, हिंदी एवं अंग्रेजी विषयों की पुस्तक, परीक्षाबोध, गाइड एवं अन्य उपयोगी अध्ययन सामग्री

निःशुल्क वितरित किया। कक्षा 9वीं के 20 स्टूडेंट्स एवं 10वीं की 26 निर्धन एवं जरूरतमंद छात्राओं को भी परीक्षाबोध, परीक्षासार, गाइड एवं अन्य

शैक्षणिक सामग्री निःशुल्क प्रदान की गई। शब्दकोशऔर विश्वकोश केवल पुस्तक वितरण ही नहीं, बल्कि छात्राओं को मोटिवेशनल स्पीच (प्रेरणादायी व्याख्यान) के

माध्यम से शिक्षक कुर्ने आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच, अनुशासन, नियमित अध्ययन एवं जीवन में बड़े लक्ष्य निर्धारित कर सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर छात्राओं को प्रेरित भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा, इस सेवा का उद्देश्य यह है कि कोई भी छात्रा केवल आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा से वंचित न रहे। प्रत्येक छात्राएं अपने सपनों को साकार कर समाज और राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके। शिक्षा सबसे बड़ा दान है और एक छात्रा को शिक्षित करना पूरे समाज को शिक्षित करना है।

स्कूल में ताला जड़कर छठवे दिन भी हड़ताल पर बैठे बच्चे

पिथौरा। महासमुंद जिले में जम्हारी हाईस्कूल के बच्चे पिछले 6 दिनों से स्कूल में ताला जड़कर हड़ताल पर बैठे हुए हैं। स्कूल में शिक्षकों की पदस्थापना की मांग को लेकर छात्र प्रदर्शन कर रहे हैं।

दरअसल, सरायपाली ब्लॉक के जम्हारी हाईस्कूल में कुल दर्ज संख्या 150 है। वहीं अगर पढ़ाने वाले शिक्षक की बात करें तो केवल 3 टिचर ही बच्चों को पढ़ाते हैं।

उक्त स्कूल में एक बाबू , 3 लेक्टर और एक प्रयोग शाला टीचर है। 3 लेक्टर में एक प्रभारी प्रिंसपल का दायित्व निभा रहे हैं।



इतना ही नहीं अनेक विषयों में शिक्षकों का पद खाली है। शिक्षक नहीं होने से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। वर्षों से शिक्षकों का पद रिक्त होने के बाद

भी शिक्षा विभाग शिक्षकों की पदस्थापना को लेकर गंभीर नहीं है। इसी को लेकर 9 जुलाई से बच्चे और पालक स्कूल के बाहर ताला जड़कर हड़ताल कर रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

राजिम बना नगर पालिका, राज्य शासन ने जारी की अधिसूचना

रायपुर। राज्य शासन ने राजिमवासियों की बहुप्रतीक्षित मांग पूरी करते हुए राजिम नगर पंचायत का नगर पालिका के रूप में उन्नयन कर दिया है। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग द्वारा इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी गई है। राजिम नगर पंचायत की सीमाएं ही राजिम नगर पालिका की सीमाएं होंगी। राज्य शासन के इस निर्णय से पूरे शहर में खुशी एवं उत्साह का वातावरण है। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव ने राजिम नगर पंचायत के नगर पालिका के रूप में उन्नयन पर कहा कि राज्य शासन के इस निर्णय से राजिम के सुनिर्योजित विकास को नई दिशा मिलेगी तथा शहरी सुविधाओं के विस्तार के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध होंगे। इससे राजिम में सड़क, नाली, पेयजल, स्वच्छता, स्ट्रीट लाइट, उद्यान, सामुदायिक भवन सहित विभिन्न आधारभूत सुविधाओं के विकास को और ज्यादा गति मिलेगी। साथ ही राज्य और केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ भी अधिक प्रभावी ढंग से नगरवासियों तक पहुंचेगा।

वित्त मंत्री चौधरी ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम की ऐतिहासिक जीत पर दी बधाई

रायपुर। वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने लॉर्ड्स के ऐतिहासिक मैदान पर इंग्लैंड के विरुद्ध शानदार प्रदर्शन करते हुए टेस्ट मैच में जीत दर्ज करने पर भारतीय महिला क्रिकेट टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। वित्त मंत्री चौधरी ने कहा कि यह जीत केवल एक मैच की सफलता नहीं, बल्कि भारतीय महिला क्रिकेट के निरंतर सशक्त होते सफ़र, खिलाड़ियों के आत्मविश्वास, अनुशासन और अदम्य क्षमता का प्रतीक है। विश्व क्रिकेट के प्रतिष्ठित मैदान लॉर्ड्स पर मिली यह ऐतिहासिक विजय प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का क्षण है। उन्होंने कहा कि भारतीय महिला क्रिकेट टीम की यह उपलब्धि देश की युवा बेटीयों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। खिलाड़ियों के समर्पण, कड़ी मेहनत और उत्कृष्ट टीम भावना ने यह सिद्ध किया है कि भारतीय बेटियां हर क्षेत्र में विश्व स्तर पर अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रही हैं। चौधरी ने टीम की सभी खिलाड़ियों, कोचिंग स्टाफ एवं सहयोगी दल को इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य और आगामी प्रतिযোগिताओं के लिए अग्रिम शुभकामनाएं दीं।

शेख समी उर रहमान ने दूपुरे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का पदभार ग्रहण किया

रायपुर। शेख समी उर रहमान ने सोमवार को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का पदभार डॉ. सुस्कर विपुल विलासराव से ग्रहण किया। पूर्व मुख्य जनसंपर्क अधिकारी, डॉ. सुस्कर विपुल विलासराव का स्थानांतरण रायपुर रेल मंडल में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक के पद पर हुआ है। शेख समी उर रहमान 2015 बैच के भारतीय रेलवे जलाशय सेवा के अधिकारी है। रहमान इससे पूर्व पूर्वोत्तर रेलवे के बनारस मंडल में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबन्धक के पद पर कार्यरत थे। रहमान भारतीय रेलवे परिचालन सेवा (आईआरटीएस) के 2015 बैच के अधिकारी है। श्री शेख समी उर रहमान मुख्य जनसंपर्क अधिकारी के पद पर पदस्थाना के पूर्व वे पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी मंडल में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक के पद पर कार्यरत थे। इससे पूर्व वे सहायक परिचालन प्रबंधक, मंडल परिचालन प्रबंधक तथा वरिष्ठ मंडल सुरक्षा अधिकारी जैसे महत्वपूर्ण पदों पर भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

पुरी की तरह रायपुर में भगवान जगन्नाथ की निकलेगी रथयात्रा

रायपुर। राजधानी रायपुर के गायत्री नगर स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर में भगवान जगन्नाथ की भव्य रथयात्रा को लेकर तैयारियां पूरी हो गई हैं। 16 जुलाई को भगवान जगन्नाथ, बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ तीनों दिव्य रथों पर सवार होकर नगर भ्रमण पर निकलेंगे। वहीं 24 जुलाई को बाहुड़ा यात्रा का आयोजन किया जाएगा। रथयात्रा से पहले 14 जुलाई की शाम 6 बजे मंदिर परिसर में नेत्रोत्सव का धार्मिक अनुष्ठान संपन्न होगा। श्री जगन्नाथ मंदिर सेवा समिति के संस्थापक अध्यक्ष और विधायक पुरंदर मिश्रा ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में रथ यात्रा को लेकर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि रथयात्रा में राज्यपाल रमन डेका और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय भगवान के रथ के समक्ष सोने की झाड़ू से ‘छेरा पहनाव’ की परंपरा निभाएंगे। यह परंपरा सेवा, समर्पण और समानता का संदेश देती है। आयोजन में विधानसभा अध्यक्ष डॉ। रमन सिंह सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, संत-महात्मा और श्रद्धालु शामिल होंगे।

खड़गवां के गज्जूपानी जलाशय के लिए 3 करोड़ रुपए से अधिक की राशि स्वीकृत

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले के किसानों के लिए एक बड़ी और राहत भरी खबर है। राज्य शासन के जल संसाधन विभाग ने विकासखण्ड खड़गवां के अंतर्गत आने वाले गज्जूपानी जलाशय के जीर्णोद्धार के लिए तीन करोड़ आठ लाख रुपए की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस जलाशय के के जीर्णोद्धार 182 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की सुविधाएं मिलेगी। इस स्वीकृत राशि से गज्जूपानी जलाशय के मुख्य बांध और उसकी नहरों के जीर्णोद्धार व मरम्मत का कार्य किया जाएगा। लंबे समय से बेहतर रखरखाव की बांट जोह रहे इस जलाशय की नहरों के सुदृढ़ीकरण से पानी की बर्बादी रुकेगी और अंतिम छोर (टेलर एंड) तक पानी आसानी से पहुंच सकेगा।

राजधानी/छत्तीसगढ़

विधानसभा में कांग्रेस ने खाद बीज की कमी का आरोप लगाते हुए स्थगन प्रस्ताव लाया

छत्तीसगढ़ में कृषि पिछड़ी, सरकार के पास किसानों के लिए चर्चा का समय नहीं, भूपेश का आरोप, कृषि मंत्री ने आरोपों को नकारा

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा में भूपेश बघेल ने कहा खाद बीज की अनुउपलब्धता और साथ ही अवषां और बिजली कटौती को लेकर कांग्रेस ने स्थगन लाया था। किसानों को खाद नहीं मिल रहा है। प्रति एकड़ 25 किलों से ज्यादा खाद नहीं ले सकते। सुपर फास्फेट नहीं ले सकते। किसानों को जबरिया एनपीके थमाया जा रहा है। सरकारी दुकानों में खाद नहीं मिल रहा है वही निजी व्यवसायी में पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध होगा। जो डीएपी 1300 का है वह बाजार में 1800 से 2000 का मिल रहा है। बीज में बहुत जगह करगा मिला, जिसे वापस करना पड़ा।

भूपेश ने कहा कि सरकार ने भी माना कि 56 प्रतिशत ही डीएपी उपलब्ध है। सरकार ने ये भी माना कि अमानक खाद की जांच में 96 अमानक डाला गया। सरकार ने ये भी कह दिया है कि 20 से 145 दिन के बीज उपलब्ध है। लेकिन अवषां की स्थिति है। सरगुजा में सिर्फ 18 प्रतिशत बुवाई हुई है। कोरबा, बस्तर, मैदानी हिस्से में बुवाई पिछड़



गई है। बीच में कुछ दिन बारिश हुई लेकिन धरती सूखी हुई है और फिर से दरारें पड़नी शुरू हो गई है। अलनीनों का प्रभाव दिखाई दे रहा है। कृषि कार्य पिछड़ गया है। कांग्रेस ने आसदी से आग्रह किया कि पावर सत्र में कृषि को लेकर चर्चा की जाए लेकिन सरकार के पास समय नहीं कि चर्चा कराई जाए। कृषि मंत्री रामविचार नेताम ने विपक्ष के आरोपों को इंकार करते हुए कहा कि सदन के अंदर विपक्ष ने खाद बीज को लेकर स्थगन के माध्यम से चर्चा की। जो आरोप लगाया वो निराधार और बेबुनियाद है और बगैर किसी जानकारी के औपचारिकता करने के लिए

किसानों को दिखाने के लिए कांग्रेस किसान हितैशी है। सदन के अंदर शासन के जवाब से आरोप का एक एक बिंदु का सही जानकारी दी। खाद की उपलब्धता को लेकर सरकार ने बताया कि अब तक जो खाद उपलब्ध होना चाहिए था उसे कहीं ज्यादा खाद का भंडारण है। खाद की समस्या के बावजूद 50 प्रतिशत से ज्यादा भंडारण छत्तीसगढ़ सरकार ने किया। कमी की पूर्ति के लिए भी वैकल्पिक व्यवस्था किया गया है। किसानों को नैनो डीएपी यूज करने के लिए दिया गया नैनो यूरिया भी विकल्प के रूप में विभाग की तरफ से किसानों को जानकारी दिया गया।

गांवों में साफ पानी पहुंचाने का मुद्दा विधानसभा में गूंजा

जल जीवन मिशन पर भ्रष्टाचार के आरोप- ना टंकी, ना ही टोटी में जल

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा के दूसरे दिन की कार्यवाही जल जीवन मिशन को लेकर पूछे गए सवाल से शुरू हुई। जल जीवन मिशन के अंतर्गत पाइप लाइन और गांवों में पानी के टंकी होने के बाद भी जल आपूर्ति नहीं होने पर विधायक भैयालाल राजवाड़े ने प्रश्न किया। विधायक भैयालाल राजवाड़े ने विधानसभा में पूछा कि गांवों में जल जीवन मिशन के तहत काम हुआ लेकिन इस काम को करवाने के बाद विभाग ने पंचायत को पानी की टंकी हेंडओवर कर दी। लेकिन जो नल की टोटी लोगों के घरों के सामने लगे हैं उनमें एक बूंद पानी नहीं आया, ना तो टंकी में पानी है और ना ही लोगों के घरों में लगे नलों में। ऐसे में क्या केवल कागज में काम पूरा हो जाने पर जल की आपूर्ति हो जा रही है।

विधायक भैयालाल राजवाड़े के सवाल पर डिप्टी सीएम अरुण साव ने जवाब दिया। मंत्री साव ने कहा जल जीवन मिशन का काम तेजी से पूरा किया गया है।यदि किसी गांव में इस तरह की कोई समस्या सामने आई है तो माननीय उसकी सूची बनाकर विभाग को उपलब्ध करा सकते हैं।



मंत्री अरुण साव ने बताया कि 928 में से 751 टंकी बन कर पूरी हो चुकी। 177 का निर्माण जारी है। 447 टंकी से पानी की आपूर्ति भी शुरू हो चुकी है।

इसी दौरान सदन में भैयालाल राजवाड़े ने कहा कि क्षेत्र में टंकियां तो बना दी गई हैं, लेकिन उनमें से एक भी टंकी से लोगों को पानी नहीं मिल रहा। उन्होंने आरोप लगाया कि सिर्फ टोटियां लगाई गई हैं, जबकि निर्माण का भुगतान भी किया जा चुका है। उन्होंने सरकार से पूरे मामले की जांच कराने की मांग की। मंत्री अरुण साव ने सदन में आश्वासन दिया कि यदि इस संबंध में कोई शिकायत या तथ्य सामने आते हैं तो सरकार पूरे मामले की जांच

कराएगी।

भैयालाल राजवाड़े के सवाल के बाद विधायक अजय चंद्राकर ने रायपुर शहर में जलापूर्ति और जल जीवन मिशन के तहत बिछाई गई पाइपलाइन के बारे में सवाल पूछा। अजय चंद्राकर ने आरोप लगाए कि जो पाइप लाइन जल जीवन मिशन के तहत बिछाई गई

है,उसके तहत कितने वाडों में पानी दिया जा रहा है किस आधार पर वाडों का चयन किया गया है।क्योंकि रायपुर के 70 वाडों में से 25 वाडों में ही जल जीवन मिशन के तहत पानी देने का प्रावधान किया गया है। इस सवाल के जवाब में डिप्टी सीएम अरुण साव ने कहा कि रायपुर शहर के 25 वाडों में जल जीवन मिशन के तहत पानी की टंकियां बनाई गई है। केंद्र की योजना के अनुसार गरीब तबके तक साफ जल पहुंचाने की योजना है।लिहाजा जिन वाडों में निचले तबके के लोगों की जनसंख्या ज्यादा है वहां पर पानी की टंकियां बनाई गई है।इन टंकियों से लोगों को जलापूर्ति निरंतर जारी है।

हिड़मा का समर्थन करना कांग्रेसियों की नक्सली विचारधारा का परिचायक

■ भाजपा प्रवक्ता ठाकुर का सवाल : तथ्या बैज हिड़मा का समर्थन करने वाले विधायक अटल श्रीवास्तव को नोटिस जारी करेंगे?

रायपुर। कांग्रेस पार्टी पर तीखा हमला बोलते हुए भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता देवलाल ठाकुर ने उनके नेताओं की मानसिकता पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। ठाकुर ने कहा कि कांग्रेसियों द्वारा दुर्दान्त नक्सली हिड़मा का समर्थन करना और उसे अपना आदर्श बताया बेहद आपत्तिजनक है। यह कृत्य साफ तौर पर कांग्रेसियों की नक्सली विचारधारा को उजागर करता है।

ठाकुर ने दिवंगत कांग्रेस नेताओं को याद करते हुए कहा कि कांग्रेस के जो विधायक आज नक्सली हिड़मा का समर्थन कर रहे हैं, उनके इस कृत्य से आज स्वर्ग में नंदकुमार पटेल, महेंद्र कर्मा



और विद्याचरण शुक्ल जैसी महान विभूतियों की आत्माएँ भी रो रही होंगी और अफसोस कर रही होंगी कि वे जीवनभर किस पार्टी में रहे, जिसके नेता आज नक्सलियों के गुगुणान कर रहे हैं! ठाकुर ने कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज से सीधे सवाल पूछा कि क्या बैज हिड़मा का समर्थन करने वाले अपने विधायक अटल श्रीवास्तव को स्पष्टीकरण के लिए नोटिस जारी करेंगे? अगर कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा इस मामले में कोई नोटिस जारी नहीं किया जाता है, तो जनमानस में यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाएगा कि कांग्रेस के अध्यक्ष और कांग्रेस के लोग पूरी तरह से नक्सली विचारधारा के साथ हैं और नक्सलियों के समर्थन में खड़े हैं।

रायपुर में अतिथि व्याख्याताओं ने उच्च शिक्षा मंत्री वर्मा के आवास का घेराव किया

अतिथि व्याख्याता या दिहाड़ी मजदूर? सरकार की नई नीति पर भड़के शिक्षक, बोले- हमें सम्मान चाहिए, दिहाड़ी नहीं

रायपुर। क्या सरकारी कॉलेजों में पढ़ाने वाले अतिथि व्याख्याता शिक्षक हैं या फिर दिहाड़ी मजदूर? यही सवाल लेकर मंगलवार को प्रदेशभर से पहुंचे अतिथि व्याख्याताओं ने उच्च शिक्षा मंत्री टंकराम वर्मा के शंकर नगर स्थित सरकारी आवास का घेराव किया। घंटों इंतजार, चंद मिनट की मुलाकात और फिर केवल आश्वासन। इससे नाराज अतिथि व्याख्याताओं ने मंत्री के बंगले के भीतर ही धरना दिया और सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। उनका कहना है कि यदि उन्हें प्रतिदिन के हिसाब से भुगतान किया गया, तो यह शिक्षक का नहीं बल्कि दिहाड़ी मजदूर का दर्जा होगा।

सरकारी महाविद्यालयों में वर्षों से पढ़ा रहे अतिथि व्याख्याताओं का कहना है कि वे उच्च शिक्षा की रीढ़ हैं, लेकिन सरकार उन्हें दैनिक मजदूरी की तर्ज पर भुगतान करने की तैयारी कर रही है। उनका आरोप है कि पहले गठित समिति ने एकमुश्त मासिक वेतन और

संवैतनिक अवकाश जैसी व्यवस्था को बुरासा दिलाया था, लेकिन अब प्रस्तावित संशोधनों में प्रतिदिन 2000 रुपये मानदेय की बात सामने आ रही है।व्याख्याताओं का कहना है कि यदि भुगतान प्रतिदिन के हिसाब से होगा तो अवकाश, परीक्षा, मूल्यांकन और अन्य शैक्षणिक दायित्वों के दौरान उनकी आय प्रभावित होगी। ऐसे में शिक्षक का सम्मान खत्म होकर उनकी स्थिति दिहाड़ी मजदूर जैसी हो जाएगी।

अतिथि व्याख्याताओं ने उच्च शिक्षा मंत्री को दिए आवेदन में कई महत्वपूर्ण मांगें रखी हैं-

- प्रतिदिन भुगतान की व्यवस्था समाप्त कर एकमुश्त मासिक वेतन 57,700 रुपये लागू किया जाए।
- सेवा अवधि कम से कम 11 माह सुनिश्चित की जाए ताकि हर वर्ष सत्र के बीच सेवा समाप्त न हो।
- संवैतनिक अवकाश की सुविधा दी



जाए।

- परीक्षा, मूल्यांकन, प्रवेश, इष्ट सहित अन्य शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों का उचित पारिश्रमिक सुनिश्चित किया जाए।
- पूर्व में जारी आदेशों के अनुसार त्योहार, दशहरा, दीपावली सहित अवकाश अवधि का मानदेय भी जारी रखा जाए।
- चार वर्ष तक निरंतर कार्य करने वाले अतिथि व्याख्याताओं की सेवा बिना व्यवधान जारी रखने की व्यवस्था बनाई जाए।



निगमों, मंडलों और आयोगों पर बिजली बिल का प्रावधिक बकाया 3035.37 करोड़ रुपए है। इसके साथ मुख्यमंत्री ने बिजली बिल का भुगतान नहीं करने की स्थिति में उपभोक्ता का विद्युत विच्छेद करने की प्रक्रिया की भी जानकारी दी।

सरकार ने अपने जवाब में यह भी बताया कि जल प्रदाय, अस्पताल, सड़क प्रकाश व्यवस्था और स्कूल शिक्षा जैसी आवश्यक जनहित सेवाओं से जुड़े शासकीय विभागों के बिजली कनेक्शन तत्काल नहीं काटे जाते। ऐसे विभागों को पहले बकाया राशि के भुगतान के लिए नोटिस जारी किए जाते हैं, ताकि आवश्यक सार्वजनिक सेवाएं प्रभावित न हों।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय द्वारा उपलब्ध

कराए गए आंकड़ों के अनुसार, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग पर सबसे अधिक 1525.18 करोड़ रुपए का बकाया है, जो कुल बकाया राशि का लगभग आधा हिस्सा है। इसके बाद पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग पर 1057.56 करोड़ रुपए का बकाया दर्ज है। इन दोनों विभागों पर ही कुल बकाया का करीब 85 प्रतिशत हिस्सा केंद्रित है।

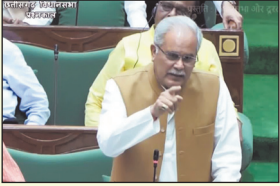
वहीं, सबसे कम बकाया वाले विभागों में आर.डी.ए. और नया रायपुर (स्मार्ट सिटी) शामिल हैं, जिन पर 0.01-0.01 करोड़ रुपए का बकाया दर्ज है। इसके अलावा वित्त विभाग पर 0.22 करोड़ रुपए, योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग पर 0.23 करोड़ रुपए, सुशासन एवं अभिसरण विभाग पर 0.27 करोड़ रुपए तथा श्रम विभाग पर 0.29 करोड़ रुपए का बकाया है।

विधानसभा में प्रस्तुत जानकारी के अनुसार, प्रदेश के 42 शासकीय विभागों के 1,57,341 बिजली उपभोक्ता कनेक्शनों पर कुल 3035.37 करोड़ रुपए की प्रावधिक बकाया राशि दर्ज है।

पेरियड के अनुसार भुगतान किया जाएगा तो सभी को लगभग 50-50 हजार रुपये मिलेंगे और इसके बाद वहां से चले गए।

इसी बात से नाराज होकर अतिथि व्याख्याताओं ने मंत्री आवास परिसर में ही धरना शुरू कर दिया और सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। छत्तीसगढ़ मूल निवास शासकीय महाविद्यालय अतिथि व्याख्याता कल्याण संघ की पदाधिकारी डॉक्टर पुष्पा ने बताया, हम छत्तीसगढ़ के निवासी हैं और छत्तीसगढ़ के ही उच्च शिक्षा मंत्री से मिलने आए थे।

कुछ प्राचार्य पेरियड आक्टयन में भेदभाव करते थे, किसी को अधिक तो किसी को कम पेरियड दिए जाते थे। इस व्यवस्था से कई लोगों के साथ अन्याय होता था। मंत्री ने कहा कि सरकार चाहती है कि किसी के साथ भेदभाव न हो और सभी को समान अवसर मिले। इसी उद्देश्य से कमेटी ने सिफारिश की है कि अतिथि व्याख्याताओं का भुगतान उनके द्वारा लिए गए पेरियड के आधार पर किया जाए। उन्होंने कहा कि यदि



लखनलाल देवांगन ने माफी मांगी और फिर भूपें मुख्यमंत्री कहा। भूपेश बघेल ने कहा कि मामले में सिर्फ एफआईआर की गई लेकिन इसके आगे

कोई कार्रवाई नहीं की गई।

इस पर विधायक अजय चंद्राकर ने कहा कि सदन में किसी का नाम लेकर कार्रवाई की मांग नहीं की जा सकती। चंद्राकर ने कहा कि जिस पर आरोप लगा है उसे सदन में बुलाया जाए और उनसे स्पष्टीकरण मांगा जाए। बघेल ने कहा कि सरकार उन्हें बुलाए।

पूर्व मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि अनिल अग्रवाल को दबाव में लाने और किसी और को फायदा पहुंचाने के लिए उन पर एफआईआर किया गया है। भूपेश बघेल ने कहा कि अब तक सिर्फ अनिल अग्रवाल पर कार्रवाई की गई। क्या उन पर दबाव बनाने और उनकी फैक्ट्री बिकवाने के लिए कार्रवाई की गई। विपक्ष ने छत्तीसगढ़ बेचना बंद करो के नारे लगाते हुए हंगामा शुरू कर दिया। कांग्रेस ने अडानी को लाभ पहुंचाने का आरोप लगाते हुए वेदांता ग्रुप और अनिल अग्रवाल पर कार्रवाई का आरोप लगाया। हंगामे के बाद विपक्ष ने वॉकआउट कर दिया।

5 नए शासकीय मेडिकल कॉलेज की स्वीकृति छत्तीसगढ़ के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि

■ सांसद संतोष पाण्डेय ने प्रधानमंत्री मोदी, केंद्रीय मंत्री न्ड्रा, मुख्यमंत्री साय और प्रदेश के मंत्री जायसवाल का माना आभार

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के मुख्य प्रदेश प्रवक्ता एवं सांसद संतोष पांडे ने छत्तीसगढ़ में चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में हुए ऐतिहासिक विस्तार पर हर्ष व्यक्त किया है। श्री पाण्डेय ने राज्य को 5 नए शासकीय मेडिकल कॉलेजों की सौगात मिलने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनका धन्यवाद ज्ञापित किया है।

पाण्डेय ने कहा कि यह निर्णय छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य ढाँचे और युवाओं के भविष्य को संवारेने की दिशा में एक क्रांतिकारी मील का पथर साबित होगा। केंद्र और राज्य का %डबल इंजन% सरकार के प्रयासों से प्रदेश को यह अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल हुई है। श्री पाण्डेय ने बताया कि नए स्वीकृत किए गए 5 शासकीय मेडिकल कॉलेजों के साथ ही प्रदेश



में 250 नई एमबीबीएस सीटों की भी स्वीकृति मिली है। इन सभी कॉलेजों में शैक्षणिक सत्र 2026-27 से प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ कर दी जाएगी। श्री पाण्डेय ने विशेष रूप से कबीरधाम सहित वनांचल और दूरस्थ क्षेत्रों को शामिल किए जाने पर प्रसन्नता जताते हुए कहा कि इससे न केवल स्थानीय स्तर पर बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होंगी, बल्कि क्षेत्र के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को अपने ही प्रदेश और जिलों में डॉक्टर बनने का सपना पूरा करने का सुनहरा अवसर मिलेगा। प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार के इस तालमेल से छत्तीसगढ़ स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में शुमार होगा।

प्रधानमंत्री मोदी को मिले पुरस्कारों पर गार्जियन की हताशा

योगेंद्र योगी

दा गार्जियन अखबार ने मोदी और भारत की छवि धूमिल करने के लिए एक अंग्रेजी मे एक लेख लिखा। जिसका सारांश यह है कि कोई झूठे भी पुरस्कार देने के लिए बुलाए तो प्रधानमंत्री मोदी दौड़े दौड़े चले जाते हैं। मतलब यह अखबार कहना चाह रहा कि मोदी पुरस्कार के भूखे हैं, साथ ही यह भी जताने की कोशिश कर रहा है, जिन देशों ने मोदी को उनकी विदेश यात्रा के दौरान पुरस्कार दिए, उनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं हैं। इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी को इन देशों ने फिजूल में पुरस्कार दिए हैं। गार्जियन ने यह लेख लिख कर मोदी सहित भारत का तो अपमान किया ही है, साथ मोदी को पुरस्कार देने वाले उन देशों के नागरिकों, पुरस्कारों और उन देशों के राष्ट्रप्रमुखों का भी अपमान किया है।

इस लेख की भड़़ास के बावजूद पीएम मोदी को पुरस्कारों का सिलसिला थम नहीं रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इंडोनेशिया के सर्वोच्च सम्मान ‘ब्रितांग आदिपूर्णा ऑफ द रिपब्लिक ऑफ इंडोनेशिया’ मेडल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया। यह सम्मान पीएम मोदी की इंडोनेशिया यात्रा के दौरान राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो ने प्रदान किया। वर्ष 2016 से अब तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एशिया, यूरोप, अफ्रीका और अमेरिका के देशों से ऐसे 34 सम्मान मिल चुके हैं। यह

किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री को मिले सम्मानों में सबसे अधिक हैं। इनमें से कुछ सम्मान सदियों पुराने हैं, जबकि कुछ सम्मान संबंधित देशों की सम्मान प्रणाली में हाल ही में शामिल किए गए हैं।

गार्जियन का यह लेख में भारत की छवि को नुकसान पहुंचाने का कुत्सित प्रयास है। विश्व का बड़ा और प्रभावशाली शायद ही कोई देश बचा होगा जिसके प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ने मोदी और भारत की तारीफ नहीं की होगी। दरअसल यह तारीफ पाश्चात्य मीडिया पचा नहीं पा रहा है, पचा इसलिए भी नहीं पा रहा है कि भारत न सिर्फ धरेलू स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी तरक्की के झंडे गाड़ रहा है। चंद्रयान और मंगलयान मिशन की कामयाबी इसके बड़े उदाहरण हैं। जो विकसित देश भी हासिल नहीं कर सके। यह अखबार यह भी भूल गया कि जब कोरोना काल में पूरी दुनिया में हाहाकार मचा हुआ था, तब भारत ने ही कोरोना वैक्सीन दर्जनों देशों को निशुल्क भेज कर रोड़ों लोगों की जाने बचाने का काम किया था। क्या ऐसे परोपकारी कार्यों के लिए उन्हें विदेशी पुरस्कार नहीं दिया जा सकता।

गार्जियन ने इसका जिक्र कभी नही किया कि विश्व को मोदी नेतृत्व में भारत ने क्या—क्या दिया है। भारत की यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस जैसी सस्ती और सुलभ डिजिटल



पेमेंट प्रणाली नेपाल, भूटान, सिंगापुर, यूएई और मॉरीशस ने अपना लिया है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस भारत की प्राचीन धरोहर योग को मोदी सरकार के प्रयासों से वैश्विक मान्यता मिली? संयुक्त राष्ट्र द्वारा हर वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। मोदी सरकार के प्रयासों से ही अफ्रीकी संघ को जी-20 का स्थायी सदस्य बनाया गया।

भारत ने प्राकृतिक आपदा के दौरान विश्व के देशों के साथ कंधे से कंधा मिला कर खड़ा रहा है। तुर्किये और सीरिया में आए भूकंप के दौरान मिशन सागर और ऑपरेशन दोस्त के जरिए विश्व स्तर पर मानवीय सहायता पहुंचाई गई। वेनेजुएला में विनाशकारी भूकंप के बाद ऑपरेशन अमिस्ताद के तहत बचाव दल और पोर्टेबल अस्पताल भेजे गए। म्यांमार में

ऑपरेशन ब्रह्मा (2025) और ऑपरेशन सहायता (2008) के तहत भूकंप व चक्रवात के दौरान भारी राहत सामग्री व चिकित्सा सुविधाएँ दी गईं। श्रीलंका में सुनामी (2004) में ऑपरेशन रेनबो और चक्रवात (2025) में ऑपरेशन सागर बंधु के माध्यम से सहायता प्रदान की गई।

भारतीय नौसेना ने हालिया समुद्री सुरक्षा अभियानों (मुख्य रूप से अरब सागर और अदन को खाड़ी) में 520 से अधिक लोगों की जान बचाई है और ईरान, लाइबेरिया, माल्टा, और सेंट व्हिसेंट एंड द ग्रेनाडाइन्स जैसे विभिन्न देशों के झंडे वाले जहाजों को समुद्री लुटेरों से सुरक्षित मुक्त कराया है। इन अभियानों की सबसे बड़ी खासियत यह रही है कि नौसेना ने बिना किसी राष्ट्रीय भेदभाव के, पाकिस्तानी और ईरानी नागरिकों सहित कई देशों के नाविकों को भी बचाया है।

गार्जियन खासकर विदेशी मीडिया को कथित मानवाधिकारों के उल्लंघन पर भारी परेशानी है। भारत में उन्हें यह उल्लंघन नजर आता है। अंग्रेजों ने भारत पर 200 साल राज किया। अंग्रेज शासकों ने इस अवधि में भारतीयों पर अत्याचारों के सारे रिकार्ड तोड़ दिए। अंग्रेज व्यापारी बन कर आए और तानाशाह बन बैठे, खूब लूट खसौट की और

भारत से सारा मालमत्ता समेट कर चंपत हो गए। आज भी कोहिनूर का हीरा इन्हीं अंग्रेजों के पास है, जो यह बताता है कि किस तरह इन्होंने भारत में लूटपाट मचाई थी। ऐसे मानवाधिकारों के उल्लंघन गार्जियन जैसे अखबारों को दिखाई नहीं देते। मानवाधिकारों के इन विदेशी पैरोकारों को जलियांवाला बाग दिखाई नहीं देता, जहां निहत्थे प्रदर्शकारियों को चारों तरफ से घेर कर एक अंग्रेज अधिकारी डायर ने गोलियों से भून डाला था।

गार्जियन को यह कभी दिखाई नहीं दिया कि किस तरह केंद्र सरकार ने मुसलमानों की भलाई का एक ऐतिहासिक काम किया, जिसे करने से पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री डरते रहे। देश की करोड़ों मुस्लिम महिलाओं को तलाक के बाद मिलने वाला कानून हक दिलवाया है। जिन्हें पहले पति तीन बार तलाक तलाक बोल कर धक्के खाने के लिए छोड़ दिया जाता था (कांग्रेस ने मुसलमानों के वोट के डर से सुप्रीम कोर्ट के शाह बानों के फैसले को ही पलट दिया था, जिसमें कोर्ट ने गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया था, इसके खिलाफ तत्कालीन कांग्रेस सरकार के प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कानून बना दिया था।

विदेशी अखबारों को तकलीफ हो रही है कि मोदी राज में कैसे मानवाधिकारों का उल्लंघन हो रहा है, जब भारत ने ऐसे आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया तब खीझ उतारने

के लिए कह दिया कि मोदी पुरस्कार के लिए दौड़े चले आते हैं। जिला स्तर, वार्ड स्तर, राज्यस्तर या राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी और निजी क्षेत्र में पुरस्कार के लिए कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं, इन्हें पाने के लिए लोग अपनी पूरी उम्र खपा देते हैं। उसमें भी जबरदस्त प्रतिस्पर्धा होती है, तब कहीं जाकर किसी एक का चयन किया जाता है। भारतीयनौसेना जानकारी

ऐसे में देशों द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिये जाने वाले पुरस्कार का मापदंड कितने कठोर होगा, इसकी कल्पना ही की जा सकती है। इन पुरस्कारों में पुरस्कार देने वाली सरकार के साथ उन देशों के करोड़ों लोगों की भावनाएं भी जुड़ी होती हैं। चलो मान भी लिया जाए कि किसी एक देश ने भारत से कुछ फायदा लेने के लिए कोई पुरस्कार दे दिया होगा, पर मोदी को तो दर्जनों देशों के सर्वोच्च पुरस्कार मिले लें, तो क्या इन सब देशों को मोदी फायदा पहुंचाएंगी, वो भी सिर्फ एक पुरस्कार के कारण, यदि ऐसा हुआ होता ना तो अब तक देश में तुफान आ जाता, कांग्रेस ओर विपक्षी दलों ने आसमान सिर पर उठा लिया होता। गार्जियन का यह लेख सिर्फ हताशा ही प्रकट करता है, इससे पहले भी इसी तरह के विदेशी अखबारों में लेखों के जरिए भारत की छवि और विकास की तरफ बढ़ते कदमों को रोकने का असफल प्रयास किया जाता रहा है।

भारत-न्यूजीलैंड की रणनीतिक साझेदारी, हिंद प्रशांत में नए समीकरणों का मजबूत संकेत

देवेश त्रिपाठी

प्रधानमंत्री मोदी की हालिया न्यूजीलैंड यात्रा के दौरान दोनों देशों के संबंधों को रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक ले जाना और रोडमैप-2030 जारी करने का निर्णय दो देशों के बीच द्विपक्षीय रिश्तों का विस्तार भर नहीं है, बल्कि यह तेजी से बदल रहे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नई भू-राजनीतिक और आर्थिक वास्तविकताओं की स्वाभाविक प्रतिक्रिया भी है। वर्तमान समय में, जब वैश्विक शक्ति संतुलन पुनर्गठित हो रहा है और समुद्री मार्ग पहले से कहीं अधिक अहम हो गए हैं, तब भारत और न्यूजीलैंड का एक-दूसरे के और निकट आना संकेत है कि दोनों देश साझा हितों को दीर्घकालिक दृष्टि से देख रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि भारत और न्यूजीलैंड के संबंध सौहार्दपूर्ण तो हमेशा से रहे हैं, लेकिन उनमें वह रणनीतिक गहराई नहीं थी, जो दोनों देशों की वास्तविक क्षमता के अनुरूप हो। आज भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, जबकि न्यूजीलैंड हिंद-प्रशांत क्षेत्र का एक स्थिर, भरोसेमंद और लोकतांत्रिक साझेदार है। दोनों ही देश स्वतंत्र, खुले और नियमाधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र के पक्षधर हैं और पिछले 40 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री का यह पहला न्यूजीलैंड दौरा इसी सोच को अधिक व्यवस्थित नीतिगत ढांचे में बदलने को लक्षित माना जा सकता है। रोडमैप-2030 की खासियत यह है कि यह सिर्फ राजनीतिक घोषणाओं तक सीमित न होकर सहयोग के कई व्यावहारिक क्षेत्रों को भी शामिल करता है। गौरतलब है कि न्यूजीलैंड और भारत ने नौ सौ साल के रिक्तों समय में मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत के लिए यह इसलिए अहम है, क्योंकि इससे



हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक और विकसित बाजार खुलेगा और निर्यातकों को पारंपरिक साझेदारों के अलावा व्यापार का एक नया गंतव्य भी मिलेगा। पिछले एक दशक में भारत ने एक्ट ईस्ट और इंडो-पैसिफिक ओरेंशंस इनिशिएटिव जैसे कदमों के जरिये हिंद प्रशांत क्षेत्र में अपनी सक्रिय मौजूदगी दर्ज कराई है।

न्यूजीलैंड के साथ रणनीतिक साझेदारी इसी व्यापक नीति का स्वाभाविक विस्तार है। भारत आज बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था में ऐसे विश्वसनीय साझेदारों का नेटवर्क विकसित कर रहा है, जिनके साथ उसके मूल्य और हित, दोनों मेल खाते हों। दोनों देशों के बीच बढ़ता सहयोग उस नई कूटनीतिक सोच का प्रतीक है, जिसमें लोकतांत्रिक मूल्य, आर्थिक परस्परता, तकनीकी सहयोग और क्षेत्रीय स्थिरता को एक साथ आगे बढ़ाने की कोशिश दिखती है। वैश्विक भू-राजनीतिक संकटों के इस दौर में चुनौतियां बेशक कम नहीं हैं, लेकिन अगर दोनों देश राजनीतिक इच्छाशक्ति बनाए रखते हुए इन संकल्पों को जमीन पर उतारने में सफल रहते हैं, तो आने वाला दशक इस संबंध को हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सबसे सशक्त और भरोसेमंद साझेदारियों में बदल सकता है।

नीरज कुमार दुबे

भारत के लिए ब्रह्मपुत्र पर महाबांध बनाकर मानो वाटर बम जैसी चेतावनी देने वाला चीन अब खुद गंभीर आशंकाओं के घेरे में आ गया है। दरअसल, तिब्बत में यारलुंग सांगपो नदी पर दुनिया की सबसे विशाल जलविद्युत परियोजना खड़ी करने की उसकी महत्वाकांक्षा पर उसके अपने वैज्ञानिकों ने ही सवाल खड़े कर दिए हैं। चीन के सरकारी समर्थन वाले भूवैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि यह महाबांध एक सक्रिय भ्रंश रेखा के ऊपर बनाया जा रहा है, जहां भूकंप, भूस्खलन और संरचनात्मक अस्थिरता का स्थायी खतरा मौजूद है। यह खुलासा केवल चीन की परियोजना की सुरक्षा पर सवाल नहीं उठाता, बल्कि भारत और बांग्लादेश जैसे निचले प्रवाह वाले देशों की जल सुरक्षा, पर्यावरण और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी नई चिंताएं पैदा करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह चेतावनी किसी बाहरी एजेंसी ने नहीं, बल्कि चीन के अपने वैज्ञानिकों ने दी है।

बताया जा रहा है कि यह अध्ययन पिछले महीने चीनी भाषा की पत्रिका सेंट्रैलरी जियोलाजी एंड टैथियन जियोलाजी में प्रकाशित हुआ, जिसकी देखरेख चीन के सरकारी स्वामित्व वाले भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण संस्थान ने की। शोध में चेंगदू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, चीन भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के नागरिक सैन्य समन्वय केंद्र तथा मध्य यारलुंग सांगपो प्राकृतिक संसाधन अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक शामिल थे। उनके निष्कर्षों के अनुसार परियोजना क्षेत्र से होकर गुजरने वाली पैन्जेन भ्रंश रेखा हिमयुग से लगातार सक्रिय रही है और इसका सीधा प्रभाव बांध, सुरंग, सड़क, पुल तथा जलाशय की स्थिरता पर पड़ेगा।

वैज्ञानिकों ने साफ कहा है कि इस भ्रंश रेखा ने आसपास की चट्टानों को कमजोर कर दिया है, जिससे किसी भी भारी निर्माण की नींव अधिक असुरक्षित हो जाती है। जलाशय के दोनों किनारों की ढलानों में मिट्टी और चट्टानों का जुड़ाव कमजोर है। लंबे समय तक पानी की दबाव, लगातार भूकंपीय गतिविधियों और भ्रंश रेखा की हलचल के कारण कभी भी विशाल भूस्खलन हो सकता है। उन्होंने यह भी चेताया कि निर्माण और संचालन के दौरान



ढलानों को मजबूत करने तथा सुरक्षा अवरोध लगाने जैसे विशेष उपाय अनिवार्य होंगे, अन्यथा किसी भी समय बड़ी दुर्घटना हो सकती है।

हम आपको बता दें कि चीन का यह महाबांध प्रतिवर्ष लगभग तीन सौ अरब किलोवाट घंटा बिजली उत्पादन के लक्ष्य के साथ बनाया जा रहा है। इसकी क्षमता चीन के श्री गाजेंस बांध से भी लगभग तीन गुना अधिक बताई जा रही है, जिस यारलुंग सांगपो नदी पर यह परियोजना बन रही है, वही नदी अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करने के बाद ब्रह्मपुत्र कहलाती है, फिर असम की जीवनरेखा बनते हुए बांग्लादेश पहुंचती है। इसलिए इस परियोजना का प्रभाव केवल चीन की सीमा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया की जल व्यवस्था पर पड़ सकता है।

भारत के लिए यह केवल पर्यावरण या जल संसाधन का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक संतुलन का प्रश्न भी है। ब्रह्मपुत्र पूर्वोत्तर भारत की कृषि, पेयजल, मत्स्य पालन, जलविद्युत उत्पादन और करोड़ों लोगों की आजीविका का आधार है। यदि चीन किसी कारणवश जल प्रवाह को नियंत्रित करता है, पानी रोकता है, अचानक छोड़ता है या किसी प्राकृतिक आपदा के कारण बांध को नुकसान पहुंचता है, तो उसका सीधा असर अरुणाचल प्रदेश और असम सहित पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र पर पड़ सकता है। ऐसी स्थिति में विनाशकारी बाढ़, पर्यावरणीय तबाही और मानवीय संकट से इंकार नहीं किया जा सकता।

सामरिक दृष्टि से यह परियोजना और भी अधिक संवेदनशील है। चीन लंबे समय से तिब्बत के जल संसाधनों को अपनी रणनीतिक शक्ति के रूप में विकसित कर रहा है। सीमा विवाद के बीच ब्रह्मपुत्र जैसी अंतरराष्ट्रीय नदी के ऊपरी हिस्से पर इतना विशाल बांध बनाना उसे भविष्य में जल प्रवाह पर प्रभाव डालने की क्षमता देता है। चाहे चीन इसे केवल बिजली उत्पादन की परियोजना बताए, लेकिन जल संसाधनों पर नियंत्रण स्वयं में एक प्रभावशाली रणनीतिक साधन होता है। किसी भी तनावपूर्ण परिस्थिति में यह क्षमता भारत के लिए दबाव का माध्यम बन सकती है।

रिपोर्टों के मुताबिक, चीन के वैज्ञानिकों ने यह भी बताया है कि परियोजना क्षेत्र हिमालय की सबसे सक्रिय भूकंपीय पट्टियों में स्थित है, जहां भारतीय और यूरोशियाई विवर्तनिक प्लेटें लगातार टकरा रही हैं। अध्ययन में कहा गया है कि पैन्जेन क्षेत्र की भूगर्भीय गतिविधियां प्रारंभिक हिमयुग से लेकर वर्तमान काल तक लगातार जारी रही हैं। तलछट के अध्ययन से लगभग साढ़े नौ हजार वर्ष पहले तक सक्रियता के प्रमाण मिले हैं। वर्ष 2017 में तिब्बत के मिलिन क्षेत्र में आया 6.9 तीव्रता का भूकंप भी इस खतरे की ताजा याद दिलाता है। वैज्ञानिकों ने माना है कि क्षेत्रीय भूकंपों के दौरान भूस्खलन और चट्टानों के धंसने की घटनाएं आसानी से हो सकती हैं, जिससे परियोजना और वहां कार्यरत लोगों की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

भारत लंबे समय से चीन से सीमा पर बहने वाली नदियों पर अधिक पारदर्शिता, समय पर सूचना साझा करने और आपसी परामर्श की मांग करता रहा है। अब चीन के अपने वैज्ञानिकों की यह चेतावनी भारत की आशंकाओं को और मजबूत करती है। यदि बीजिंग वास्तव में अपने इस महाबांध को सुरक्षित मानता है तो उसे अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप पारदर्शिता दिखानी चाहिए, तकनीकी जानकारी साझा करनी चाहिए और निचले प्रवाह वाले देशों की चिंताओं को गंभीरता से लेना चाहिए। यहां सबसे बड़ा प्रश्न चीन की उस विकास नीति पर है जिसमें प्रकृति को जीतने का अहंकार दिखाई देता है।

पीडीपी नेता इल्टिजा मुफ्ती! सरला भट्ट को भूल गई आप?

विकास मिश्रा

जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की बेटी और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की नेता इल्टिजा मुफ्ती बहुत शोर मचा रही हैं कि मार्टर्स डे के एक दिन पहले उन्हें नजरबंद कर दिया गया। वे 1931 में डोगरा शासन के दौरान पुलिस की गोली से मारे गए 22 प्रदर्शनकारियों की याद में शहीदी दिवस मनाना चाह रही थीं।

सवाल यह है इल्टिजा कि 95 साल पुरानी एक घटना को लेकर आप बेचैन हैं लेकिन 36 साल पहले जम्मू-कश्मीर में सरला भट्ट नाम की एक नर्स को आतंकवादियों ने सिगरेट से जलाया था, खौफनाक तरीके से बलात्कार किया था और अंत में हत्या करके फेंक दिया था, उसकी कोई याद है आपके मन में? कश्मीरी पंडितों के कत्लेआम पर क्या कभी आपने अफसोस जाहिर किया?

इल्टिजा, जब आप अपनी मां की गोद में खेल रही थीं तब कुछ महीनों के अंतराल पर दो घटनाएं हुई थीं। 8 दिसंबर 1989 को आपकी मौसी रूबैया सईद का जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट यानी जेकेएलएफ के आतंकवादियों ने अपहरण कर लिया था। उस समय आपके नाना मुफ्ती मोहम्मद सईद देश के गृह मंत्री हुआ करते थे। आतंकियों की मांग थी कि उनके पांच साथियों को रिहा किया जाए। उस समय विश्वनाथ प्रताप सिंह देश के प्रधानमंत्री हुआ करते थे। उनकी सरकार झुक गई और 13 दिसंबर 1989 को पांच खूंखार आतंकवादियों अब्दुल हमिद शेख, शेर खान, नूर मोहम्मद कलवाल, अलताफ अहमद तथा जावेद अब्दद जरगार को रिहा कर दिया गया।

क्या आपको पता है इल्टिजा कि इन आतंकवादियों ने बाद में कितना कत्लेआम मचाया? राजनीति में आने के बाद भी आपने शायद जानने की कोशिश नहीं की होगी! आपकी मौसी के अपहरण और आतंकियों की रिहाई के कुछ महीने बाद ही एक और घटना हुई। मूलतः अनंतनाग की रहने वाली और श्रीनगर में शेर-ए-कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में बतौर नर्स काम कर रही सरला भट्ट का



जेकेएलएफ के आतंकवादियों ने ही अपहरण कर लिया। क्या आपको पता है इल्टिजा कि सरला भट्ट का दोष क्या था? उस समय जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट ने कश्मीर से पंडितों को भगाने का अभियान छेड़ रखा था और सरला भट्ट ने खौफ के सामने झुकने से इनकार कर दिया था। आतंकवादियों ने 18 अप्रैल 1990 को हब्बा खातून हॉस्टल से सरला का अपहरण कर लिया। रात भर बलात्कार किया, सिगरेट से उनके शरीर जलाए गए और अगले दिन श्रीनगर के लाल बाजार क्षेत्र में गोलियों से छलनी सरला की लाश मिली।

पास ही एक हस्तलिखित नोट मिला जिसमें जेकेएलएफ ने हत्या की जिम्मेदारी ली थी और एक झूठा आरोप भी मढ़ दिया कि सरला की सूचना के आधार पर पुलिस ने जेकेएलएफ की एक बैठक के दौरान छापामारी की थी। उस छापेमारी में जेकेएलएफ का खूंखार आतंकवादी यासीन मलिक घायल तो हुआ लेकिन बच निकला जबकि कुछ आतंकवादी पकड़े गए। जबकि हकीकत यह थी कि सरला इन सब बातों से बिल्कुल अनजान थी। पुलिस से उसका कोई रिश्ता नहीं था। उसे प्रताड़ित करने और हत्या के पीछे एक ही मकसद था कि कश्मीरी पंडितों में खौफ पैदा किया जाए। इल्टिजा, क्या आपको पता है कि सरला भट्ट की हत्या के मामले में 36 साल बाद पुलिस ने एंटी-टेररिज्म कंट में 737 पन्नों की चो चार्जशीट दायर की है उसमें जिन लोगों पर हत्या का आरोप है उनमें उस अब्दुल हमिद शेख का नाम भी शामिल है जिसे

आपकी मौसी के बदले छोड़ा गया था!

हालांकि अब वो मर चुका है। और हां, एक बार पुराने कागजात खंगाल कर देखिए कि कश्मीर की बेटी सरला भट्ट की हत्या पर क्या आपके नाना मुफ्ती मोहम्मद सईद या आपकी मां महबूबा मुफ्ती ने कभी सार्वजनिक रूप से अफसोस जाहिर किया? आपके नाना 2 नवंबर 2002 से 2 नवंबर 2005 तक और फिर 3 मार्च 2015 से 7 जनवरी 2016 तक जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री रहे। आपकी मां 4 अप्रैल 2016 से 19 जून 2018 तक मुख्यमंत्री रहीं। क्या इन दोनों ने कभी कोशिश की कि सरला भट्ट के हत्यारों को कानून के शिकजे में लाया जाए। सरला भट्ट की हत्या के सारे सबूत मौजूद थे फिर भी कुछ नहीं हो पाना क्या दर्शाता है? उस दौर में कश्मीर पुलिस की नाकामी और कश्मीरी नेताओं की चुपपी क्या संकेत देती है?

इल्टिजा, क्या आपको यह पता है कि सरला भट्ट की अस्थियों को समेटने के लिए जब उनके परिजन श्मशान घाट पहुंचे थे तो क्या हुआ था! श्मशान घाट पर डेढ़-दो सौ लोग जमा थे। इन लोगों ने सरला की अस्थितियों को पैरों तले रौंद दिया था और धमकाया था कि कश्मीर छोड़ कर क्यों नहीं जाते?

आपकी पीढ़ी तो सरला भट्ट को भुला ही बेटी थी लेकिन भला हो मौजूदा नेतृत्व और दिव्या देव जैसी पुलिस अधीक्षक का जिन्होंने पुराने सबूतों के आधार पर ही अपनी खोज को आगे बढ़ाया। उस दौर की नर्सों को दूँध निकाला। सरला के शव के पास से बरामद हस्तलिखित पत्र का मिलान किया गया। गवाहों को भरोसा दिलाया गया कि उनकी सुरक्षा की गारंटी है। इसके बाद सारे तार जुड़ते चले गए। अब यासीन मलिक इस हत्याकांड के शिकंजे में है। हो सके तो सिस्टिंस नीलकंठ गंजू, टिका लाल टपलू और सर्वाजित कौल हत्याकांड के बारे में भी पढ़िएगा। तब कश्मीर के भीतर रक्रूता का सच आपके सामने आएगा। मगर आप ऐसा नहीं करेंगी क्योंकि आपको किसी की शहादत से कोई लेना-देना नहीं है। आपको केवल अपनी चाहत को राजनीति करनी है। कश्मीर की संस्कृति से आपका क्या लेना-देना?

तेल के खेल में रूस के कूदने से भड़की एक और चिंगारी

हरि वर्मा

होर्मुज बंद है। तेल के खेल ने दुनिया के सामने फिर बड़ा संकट खड़ा कर दिया है। ताजा हमले के बाद अमेरिका-ईरान के बीच शांति की तमाम कूटनीतिक कोशिशें कमजोर पड़ गई हैं। रूस के खुलकर सामने आ जाने के बाद संघर्ष के अब और आक्रामक रुख अखियाार करने के आसार बन गए हैं। पश्चिम एशिया के इस संघर्ष से दुनिया के साथ-साथ भारत भी प्रभावित है। ताजा संकट से उबरने के लिए देश के सामने कई चुनौतियां पैदा हो गई हैं। रूस ने ईरान में अपना प्रलयंकारी विमान टीयू-214 पीवी तैनात कर दिया है। इस संघर्ष में रूस के खुलकर आने की अपनी वजह है। अमेरिका नहीं चाहता कि कोई रूस से तेल की खरीद करे क्योंकि वह रूस से तेल खरीद को यूक्रेन के खिलाफ रूस की आर्थिक मजबूती मानता है, इसलिए जब-तब अमेरिका ने रूस से तेल न खरीदने के लिए भारत पर दबाव बढ़ाया। टैरिफ बढ़ाने की धमकियां दीं। भारत ने ऊर्जा संकट को देखते हुए न केवल रूस से तेल खरीद जारी रखी बल्कि जून में तो रूस से 34 फीसदी ज्यादा तेल की खरीद की। अमेरिकी धमकियों को दरकिनार कर भारत ने कूटनीति की राह पर अमेरिका, वेनेजुएला और अफ्रीका से भी तेल खरीद जारी रखी। जून में भारत का आयात बढ़कर 31 फीसदी पहुंच गया जिसमें बड़ा योगदान कच्चा तेल मद का है। हालांकि भारत अभी 40 देशों से कच्चा तेल खरीद रहा है। इसमें रूस, अमेरिका, वेनेजुएला, अफ्रीका आदि हैं। रूस ने अमेरिका-ईरान के बीच ताजा संघर्ष में खुलकर कूदकर अमेरिका के खिलाफ पांव पसार दिया है। इस कदम के जरिए वह नाटो के एकाधिकार को भी चुनौती दे रहा है। इस संघर्ष से भारत को पहले भी काफी नुकसान झेलना पड़ा है। जून में संघर्ष के दौरान तीन भारतीय नाविक बर्बाद हुए। ताजा हमले में एक भारतीय नाविक लापता है। राहत रही कि देश सकुशल बचा लिए गए। जान-माल के नुकसान के अलावा तेल-गैस संकट बढ़ा। गैस एजेंसियों पर बैकलॉग की स्थिति पैदा हुई। आम लोग त्राहि-त्राहि करते रहे। सरकार ने कीमत की



कसौटी पर आम लोगों को 1700 वाला एलपीजी गैस सिलिंडर 950-1000 रुपये में उपलब्ध कराया। अमेरिका-ईरान के बीच अंतरिम शांति समझौते के बीच होर्मुज जलडमरूमध्य से आवाजाही सामान्य होने पर दुनिया के साथ-साथ भारत ने भी राहत की सांस ली थी। बरास्ते होर्मुज 60 फीसदी कच्चा तेल, 90 फीसदी एलपीजी की आपूर्ति होती है। जून में भारत ने रूस से अधिक तेल खरीद कर और होर्मुज में आवाजाही सामान्य होने पर तेल, गैस, ऊर्जा का ताजा भंडारण संतोषजनक स्थिति में ला दिया था। ताजा संकट से भले 60 दिनों के स्टॉक के कारण देश में तत्काल परेशानी न हो लेकिन यदि यह संघर्ष नहीं थमा तो भविष्य में तेल-गैस के संकट के साथ-साथ महंगाई की मार पड़ना तय है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के मुताबिक 2008 में भी मध्य-पूर्व के भू-राजनीतिक संकट ने तेल के दाम काफी बढ़ा दिए थे। 2010 में तेल उत्पादक देशों ने यह संकट झेला। यूं भी देश में ई-20 (इथेनॉल पेट्रोल) को लेकर विवाद की स्थिति पैदा है। वाहनों के माइलेज से लेकर इंजन के नुकसान को लेकर बहस छिड़ी है। वैश्विक हालात के चलते ऊर्जा संकट झेल रहे देश में ई-20 पेट्रोल को लेकर चुनौती है। अब ताजा संघर्ष के आक्रामक होने पर देश में ऊर्जा संकट के बीच तेल-गैस की पर्याप्त आपूर्ति बनाए रखना और कीमंत निर्यातित रखना चुनौती बन गई है।

सूर्य स्वरूपा गायत्री

वेदमाता गायत्री सूर्य स्वरूपा कही गई हैं। सूर्य ऐसा, जो बाच् ही नहीं, अंतस को भी आलोकित कर देता है।

दूसरे शब्दों में मां गायत्री परमात्मा का ऐसा प्रतीक हैं, जिनकी उपासना से मन में सद्बुद्धि या विवेक को जन्म दिया जा सकता है। यदि मनुष्य यह अनुभूत करने लगे कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं, तो सृष्टि का कौन पदार्थ उसके लिए दुर्लभ हो सकता है। इसी कारण गायत्री को ‘कामधेनु’ या ‘कल्पवृक्ष’ भी कहा गया है।

ज्ञान की आदि श्रोत होने के कारण ही वे वेदमाता कही गई हैं। उनका कर्मडल पवित्रता और माला साधना का प्रतीक है। आदि शक्ति मां गायत्री की विविध स्वरूपों में आराधना की जाती है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

मां सरस्वती- विद्या और कला की प्रतीक मां सरस्वती को बहमा की पत्नी माना गया है। साथ ही वे संस्कृति की प्रतीक कही जाती हैं। उनके हाथों में वीणा कला से प्राप्त होने वाले असीम आनंद का प्रतीक है।

मां पार्वती : भगवान शिव की अर्द्धांगिनी पार्वती उस तपश्चर्या की प्रतीक हैं, जिसके माध्यम से शिव अर्थात परमात्मा का प्रतीकात्मक साबित्थ्य प्राप्त किया जा सकता है।

मां दुर्गा : आसुरी प्रवृत्तियों के

माता गायत्री की उपासना मां सरस्वती पार्वती, दुर्गा, लक्ष्मी और काली आदि स्वरूपों में की जाती है। प्रत्येक स्वरूप में वे हमें कोई न कोई प्रेरणा प्रदान करती हैं।

उन्मूलन के लिए विभिन्न देवताओं की शक्तियों के संगम से जन्मी दुर्गा संगठन शक्ति की सुंदर प्रतीक हैं।

मां लक्ष्मी : आदिशक्ति गायत्री का लक्ष्मी स्वरूप परमात्मा के वैभवमय स्वरूप का प्रतीक है। यह स्वरूप देवताओं एवं दैत्यों दोनों को प्राप्त हो



सकता है, शर्त मात्र समुद्र मंथन जैसा कठोर श्रम करने की है।

मां काली : अत्याचार की हर सीमा लांघ जाने के बाद सृजनकारी मां रौद्र रूप धारण कर काली का स्वरूप धारण कर लेती हैं और अन्याय के कटे सिर उनके गले की शोभा बनते हैं। वे अन्याय से संघर्ष करने की प्रेरणा देती हैं। (साधार : देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

जीवन में संतुलन लाना है श्रीकृष्ण होना

कृष्ण जीवन की संभावनाओं के प्रतीक हैं। कृष्ण होना हमारे जीवन में संतुलन लाना है। कृष्ण का विराट स्वरूप कहता है कि हमारे भीतर भी विराट क्षमताएं हैं, उसी को समझकर उनका सदुपयोग करने में ही जन्माष्टमी की सार्थकता सिद्ध होगी।

कृष्ण जीवन की संभावनाओं के प्रतीक हैं। कृष्ण होना हमारे जीवन में संतुलन लाना है। कृष्ण का विराट स्वरूप कहता है कि हमारे भीतर भी विराट क्षमताएं हैं, उसी को समझकर उनका सदुपयोग करने में ही जन्माष्टमी की सार्थकता सिद्ध होगी।

आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता श्रीश्री रविशंकर का चिंतन। जन्माष्टमी भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव है। अष्टमी का आधा चांद महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह सत्य के प्रकट और अप्रकट पहलुओं के बीच एक पूर्ण संतुलन का द्योतक है, दिखने वाले भौतिक जगत और न दिखने वाले आध्यात्मिक जगत के बीच में। आध्यात्मिक और भौतिक दोनों जगत में श्रीकृष्ण पारंगत थे। अष्टमी पर उनके जन्म होने का यही प्रतीक है। कृष्ण का ज्ञान हमारे समय के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है, क्योंकि न ही वह भौतिक सुखों को बटोरने में आपको खोने देता है और न ही आपको सब कुछ त्यागने देता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव मनाने का अर्थ है कि अत्यंत विपरीत, लेकिन संगत गुणों को आत्मसात करना और अपने जीवन में उन्हें प्रकट करना।

कृष्ण का अर्थ है हमारा सबसे आकर्षक अस्तित्व या आत्मा। राधे-श्याम अनंत का प्रतिनिधित्व करता है। राधे व्यक्तिगत जीवन और श्याम अनंत लगाकर धूप दीप से उनका पूजन करना चाहिए। इस व्रत की कथा का श्रवण करने से भी विष्णुजी की कृपा प्राप्त होती है।

इंद्रियों पर नियंत्रण के लिए एकादशी व्रत शास्त्रों में कहा गया है- आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम। अर्थात आत्मा को रथी जानो, शरीर को रथ और बुद्धि को सारथी मानो। इनके भगवान विष्णु का पूजन किया जाता है। देश में कहीं-कहीं बलराम-कृष्ण भी पूजा की होती है। कहते हैं इस एकादशी के फल के बारे में श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को बताया था कि अपरा एकादशी पुण्य प्रदाता और बड़े पापों का नाश करने वाली है। इस दिन व्रत करने वाला किसी भी तरह के पाप से मुक्त होकर अंततः विष्णुलोक में प्रतिष्ठा पाता है।

विष्णु पूजन शुभ फलदायी अपरा एकादशी व्रत के दिन पूजा अर्चना का विशेष विधान रहता है। इस व्रत का प्रारंभ दशमी तिथि से ही हो जाता है। व्रतधारक को दशमी तिथि से ही भोजन और आचार-विचार में संयम रखना चाहिए। एकादशी के दिन प्रातः जल्दी उठकर अन्य विन्यासों से निवृत्त हो स्नान आदि के पश्चात भगवान विष्णु का पूजन किया जाना चाहिए। संंध्या समय में भगवान को फल-फूल का भोग

इसमें इंद्रियों का अश्व तथा मन का लगाम होना भी अंतर्निहित है। ऋषियों ने अन्य मंत्रों में इसका भी जिक्र किया है। इस प्रकार दस इंद्रियों के बाद मन को ग्यारहवीं इंद्रि माना गया है। अतएव इंद्रियों की कुल संख्या एकादश होती है।

एकादशी तिथि को मनःशक्ति का केंद्र चंद्रमा क्षितिज की एकादशवीं कक्षा पर अवस्थित होता है। यदि इस अनुकूल समय में मनोनिग्रह की साधना की जाए तो वह सद्यः फलवती सिद्ध हो सकती है।

इसी वैज्ञानिक आशय से एकादशी पर धर्मानुष्ठान और व्रतोपवास का विधान है। संक्षेप में कहा जाए तो एकादशी व्रत का अर्थ है- अपनी इंद्रियों पर निग्रह करना।

जीवन हैं। कृष्ण हर जीव की आत्मा हैं और जब व्यक्तित्व में हमारे सच्चिदानंद स्वरूप की चमक दिखने लगती है, तब स्वतः ही जीवन का संपूर्ण संवर्धन होने लगता है। कहा जाता है कि कृष्ण मक्खन चोरी करते थे। इस रूपक का क्या अभिप्राय है। मक्खन एक प्रक्रिया का अंतिम उत्पाद है। पहले दूध को दही बनाया जाता है और फिर अच्छी तरह से मथकर ही वह दही मक्खन बन जाता है। दूध या दही की तरह जीवन का भी मंथन बहुत सारी घटनाओं, परिस्थितियों और उतार-चढ़ाव द्वारा होता है। अंत में मक्खन बाहर निकलता है। वही आपका संतत्व है। इसका सार यह है कि जीवन में संतुलन बनाए रखना चाहिए। आनंदित और केंद्रित रहना चाहिए। जब सब कुछ जीवन में ठीक है, तब एक बड़ी मुस्कान रखना आसान है, परंतु यदि आप प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मुस्करा सकते हैं, तब समझिए कि आपने जीवन में सच में कुछ पाया है।

कृष्ण की त्रिभंगी मुद्रा कुछ ऐसी ही है। उनका एक पांव पृथ्वी पर मजबूती से जमा हुआ है और दूसरा उठा हुआ है, परंतु संतुलित है। ऐसे ही नृत्य हो सकता है। यह पूर्णतः संतुलित जीवन जीने के सही तरीके को दर्शाता है। जब आप मन में खोये हों तो नृत्य संभव नहीं हो पाता है। साक्षी भाव से मन की अशांति को देखने से ही हम उससे ऊपर उठ सकते हैं। यानी जब भी आप अशांत हों, तो यह सोचने के बजाय कि ऐसा नहीं होना चाहिए था, आप बस समर्पण कर दीजिए।

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं, ‘ऐसा क्यों है कि इतने सारे लोग मेरे बारे में जानने में सक्षम नहीं हैं। इसका कारण यह है कि वे हमेशा अपने राग और द्वेष के बीच फंसे हुए हैं।’ जो व्यक्ति तीव्रता से किसी के लिए राग रखता है या किसी के लिए बहुत ज्यादा द्वेष रखता है, वह मोह के मायाजाल में फंस जाता है। इस तरह के व्यक्ति को जब जीवन में कोई समस्या आती है, तो उसका मन पूरी तरह से

कृष्ण होना हमारे जीवन में संतुलन लाना है। कृष्ण का विराट स्वरूप कहता है कि हमारे भीतर भी विराट क्षमताएं हैं, उसी को समझकर उनका सदुपयोग करने में ही जन्माष्टमी की सार्थकता सिद्ध होगी। आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता श्रीश्री रविशंकर का चिंतन। जन्माष्टमी भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव है।



समस्या को सुलझाने में उलझ जाता है और वह अपना बहुमूल्य समय चिंता में खो देता है। इसके लिए, भगवान कृष्ण कहते हैं, ‘जिनके पुण्य फलित होते हैं, वे अपने दुख से मुक्त हो जाते हैं और वे मेरी ओर आकर्षित होने लगते हैं। जिनके पाप (बुरे) कर्म अभी शुद्ध नहीं हुए हैं, वे अज्ञान और भ्रम में फंसे रहते हैं।’ जब तुम प्रकाश की ओर चलते हो, तो अज्ञान का अंधकार स्वतः ही गायब होना शुरू हो जाता है। लेकिन पाप तुम्हें प्रकाश की ओर बढ़ने नहीं देता। यही दुख, दर्द और पीडा का कारण बनता है। जब व्यक्ति पूरी तरह से यह जान लेता है कि

वह शरीर नहीं है, शुद्ध चेतना है, तो उसे भरपूर शक्ति मिल जाती है। परमात्मा में विश्वास ही पर्याप्त है। वास्तव में परमात्मा को जानने का यही मतलब होता है। कृष्ण सभी संभावनाओं के प्रतीक हैं। कृष्ण होना मानव और दिव्यता के सभी पहलुओं का पूरी तरह से खिलना है। जन्माष्टमी के दिन कृष्ण के उस विराट स्वरूप को अपनी चेतना में एक बार फिर सजीव करने के लिए अपने दैनिक जीवन में अपने सच्चे स्वरूप को प्रकट करना ही कृष्ण के जन्म होने का असली रहस्य है।

एकादशी व्रत करने का अर्थ है- अपनी इंद्रियों पर निग्रह करना



ज्येष्ठ माह में कृष्णपक्ष की एकादशी अचला एकादशी या अपरा एकादशी कही जाती है। इस दिन व्रत और पूजन की बड़ी महिमा है। इस एकादशी को धन-धान्य, कीर्ति और पुण्य प्रदान करने वाली माना जाता है। ज्येष्ठ माह में कृष्णपक्ष की एकादशी अचला एकादशी या अपरा एकादशी कही जाती है।

इस दिन व्रत और पूजन की बड़ी महिमा है। इस एकादशी को धन-धान्य,

कीर्ति और पुण्य प्रदान करने वाली माना जाता है। यह माना जाता है कि यह सभी

तरह के पापों का नाश करती है।

अचला एकादशी के दिन व्रत से जन्म-जन्मांतर के पाप और कलुषों का नाश होता है। माना जाता है कि माघ में सूर्य के मकर राशि में होने पर प्रयाग स्नान, शिवरात्रि पर काशी में रहकर किया गया व्रत, गया में पिंडदान, वृषभ राशि में गोदावरी स्नान, बद्रीकाश्रम में भगवान के दर्शन या सूर्यग्रहण पर कुरुक्षेत्र में स्नान और दान करने से जो फल मिलता है, वही फल अपरा एकादशी के व्रत से प्राप्त होता है।

इस दिन उपवास करके भगवान के वामन अवतार की पूजा करने से मनुष्य को अपने पापों से मुक्ति मिलती है और विशेष कृपा प्राप्त होती है। इस दिन तुलसी, चंदन, कपूर, गंगाजल सहित भगवान विष्णु का पूजन किया जाता है। देश में कहीं-कहीं बलराम-कृष्ण भी पूजा की होती है। कहते हैं इस एकादशी के फल के बारे में श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को बताया था कि अपरा एकादशी पुण्य प्रदाता और बड़े पापों का नाश करने वाली है। इस दिन व्रत करने वाला किसी भी तरह के पाप से मुक्त होकर अंततः विष्णुलोक में प्रतिष्ठा पाता है।

विष्णु पूजन शुभ फलदायी अपरा एकादशी व्रत के दिन पूजा अर्चना का विशेष विधान रहता है। इस व्रत का प्रारंभ दशमी तिथि से ही हो जाता है। व्रतधारक को दशमी तिथि से ही भोजन और आचार-विचार में संयम रखना चाहिए। एकादशी के दिन प्रातः जल्दी उठकर अन्य विन्यासों से निवृत्त हो स्नान आदि के पश्चात भगवान विष्णु का पूजन किया जाना चाहिए। संंध्या समय में भगवान को फल-फूल का भोग

मन का सदेह

एक व्यक्ति की घड़ी खो गई। उसने पूरे घर में खोज लिया, पर वह कहीं नहीं मिली। अचानक उसकी नजर खिडकी के पार घर के बगीचे में काम करने वाले लडके पर गई। उसे वह कुछ संदिग्ध दिखाई दिया। संदेह आंखों में भरकर जब उस व्यक्ति ने लडके की ओर देखा, तो उसने नजरें झुका लीं। उस व्यक्ति को यकीन हो गया कि घड़ी उसी ने चुराई है। वह लडके पर नजर रखने लगा। उसे लडके की हर गतिविधि से लग रहा था कि वही चोर है। वह व्यक्ति लडके से कड़ाई से पूछताछ करने की बात सोच ही रहा था कि एक दिन कबर्ड की सफाई करते हुए उसे वह घड़ी मिल गई। उसे याद आया कि उसने ही एक दिन अपने कपड़ों के साथ अपनी घड़ी कबर्ड में रखी थी। लडका अब भी बगीचे में काम कर रहा था। व्यक्ति ने खिडकी से लडके की ओर फिर देखा। लडके ने उसे इस तरह देखकर नजरें नीची कर लीं, लेकिन अब उस व्यक्ति को लडके की कोई गतिविधि संदिग्ध नहीं लग रही थी। कथा मर्म : संदेह हमारे मन पर कब्जा जमाकर हमें गलत फैसले लेने के लिए बाध्य कर देते हैं।

गुरु साक्षात परब्रह्म का स्वरूप है



भारतीय संस्कृति में गुरु और शिष्य के संबंध को अत्यंत पावन और गौरवपूर्ण माना गया है। गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए प्राचीन शास्त्रों में कहा गया है कि गुरु साक्षात परब्रह्म का स्वरूप है। इसलिए हमें ईश्वर से पूर्व गुरु की वंदना करनी चाहिए। जीवन में प्रथम गुरु हमारे माता-पिता होते हैं। गुरु वही है जिसे देखकर मन प्रणाम करे, गुरु जिनके समीप बैठने से हमारे दुःख दूर होते हैं।

गुरु वह ऊर्जावान और ज्ञान का पुंज है जो हमारे भीतर आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करके सत्य से हमारा साक्षात्कार कराता है। गुरु के सानिध्य

हमें ईश्वर से पूर्व गुरु की वंदना करनी चाहिए। जीवन में प्रथम गुरु हमारे माता-पिता होते हैं। गुरु वही है जिसे देखकर मन प्रणाम करे, जिनके समीप बैठने से हमारे दुःख दूर होते हैं।

से जीवन की दिशा और दशा, दोनों बदल जाती है। उदाहरणस्वरूप अपनी विलक्षण प्रतिभा और ओजस्वी वाणी के द्वारा भारत की संस्कृति का परचम संपूर्ण विश्व में लहराने वाले स्वामी विवेकानंद को जब गुरु रामकृष्ण परमहंस का वरदहस्त प्राप्त हुआ तब वह नरेंद्रनाथ से स्वामी विवेकानंद के रूप में प्रसिद्ध हुए। इसी प्रकार गुरु द्रोणाचार्य की शिक्षा, प्रेरणा और आशीर्वाद ने अजरुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर के रूप में प्रतिष्ठित किया। वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का निरंतर हास होता जा रहा है। गुरु शिष्य के पवित्र संबंधों पर भी इसका प्रभाव दिखाई पड़ रहा है। समाज में आवश्यकता है, ऐसे गुरुओं की जो दया, क्षमा, सदाचार इत्यादि मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हुए धैर्य, विवेक और त्याग आदि सद्गुणों के माध्यम से

शिष्य को अंधकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले चलें। इस प्रकार मानव मन में व्याप्त विष रूपी बुराई को दूर करने में गुरु का विशेष योगदान होता है, परंतु सदुरु बड़े भाग्य से मिलता है। सदुरु की तलाश शिष्य को ही नहीं होती, बल्कि गुरु भी अपने ज्ञान की धरोहर को सुरक्षित हाथों में सौंप कर परमानंद की अनुभूति करता है। शिष्य के समर्पण और श्रद्धा भाव को देखकर उसका अंतर्मन आश्चर्य हो जाता है।

वह शिष्य की कमियों को धैर्यपूर्वक सुधारते हुए उसे दिव्य ज्ञान प्रदान करता है। सौभाग्यवश ऐसे स्वयंसिद्ध गुरु का संरक्षण यदि किसी को भी प्राप्त हो जाए, तो उसके जीवन में संकट रूपी बादलों के छाने के बावजूद उसका मन कभी विचलित नहीं होता। कल्याण के मार्ग में प्रवृत्त करने वाले ऐसे गुरुजनों को शत-शत नमन।

चार मठ स्थापित कर आदि शंकराचार्य ने फूँके थे सनातन धर्म में प्राण

शंकराचार्य कहा कि परमात्मा एक ही समय में सगुण और निर्गुण दोनों ही स्वरूपों में रहता है। उन्होंने वेदों के ज्ञान को पूरे भारतवर्ष में पहुंचाने का काम किया और इस तरह भारतीय संस्कृति के उत्कर्ष में अहम भूमिका निभाई।

आदिशंकराचार्य ने भारत के चारों कोनों में धार्मिक मठों की स्थापना की। उन्होंने दक्षिण के श्रृंगेरी में शंकराचार्य पीठ, जगन्नाथपुरी में गोवर्धनपीठ, पश्चिम द्वारका में शारदामठ और बद्रीकाश्रम में ज्योतिर्पीठ स्थापित किया। ये मठ भारत की एकात्मकता के परिचायक हैं।

इन चारों मठों के लिए उन्होंने शंकराचार्य पद की स्थापना करके अपने चार प्रमुख शिष्यों को यहां आसीन किया।

आदि शंकराचार्य आठ वर्ष की आयु में चारों वेदों में निष्णात हो गए थे, बारह वर्ष की आयु में पहुंचते हुए वे सभी शास्त्रों में पारंगत थे, चौदह वर्ष की उम्र में ब्रह्मसूत्र, गीता, उपनिषद पर भाष्य रचकर अल्पायु में उन्होंने संसार त्याग दिया।

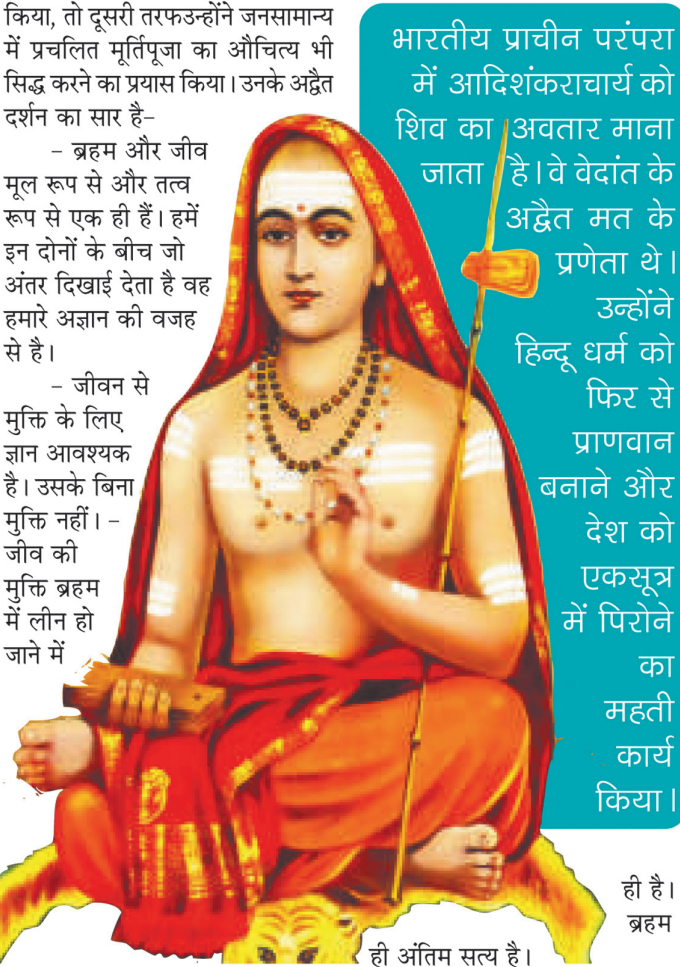
अद्वैत मत के प्रवर्तक शंकराचार्य का दृष्टिकोण समन्वयवादी था। एक तरफ उन्होंने अद्वैत चिंतन को पुनर्जीवित

किया, तो दूसरी तरफ उन्होंने जनसामान्य में प्रचलित मूर्तिपूजा का औचित्य भी सिद्ध करने का प्रयास किया। उनके अद्वैत दर्शन का सार है-

- ब्रह्म और जीव मूल रूप से और तत्त्व रूप से एक ही हैं। हमें इन दोनों के बीच जो अंतर दिखाई देता है वह हमारे अज्ञान की वजह से है।

- जीवन से मुक्ति के लिए ज्ञान आवश्यक है। उसके बिना मुक्ति नहीं। - जीव की मुक्ति ब्रह्म में लीन हो जाने में

भारतीय प्राचीन परंपरा में आदिशंकराचार्य को शिव का अवतार माना जाता है। वे वेदांत के अद्वैत मत के प्रणेता थे। उन्होंने हिन्दू धर्म को फिर से प्राणवान बनाने और देश को एकसूत्र में पिरोने का महती कार्य किया।



ही है। ब्रह्म

ये 7 उपाय हों साथ तो जिंदगी बन सकती है खास



वास्तु जिंदगी पर कैसे प्रभाव डालता है। इस बात को आप आजमा कर ही समझ सकते हैं। भले ही वास्तु के उपाय भले ही छोटे-छोटे होते हैं, लेकिन जिंदगी में ये बहुत कारगर सिद्ध होते हैं।

ऐसे ही कुछ वास्तु उपाय आजमाकर, जिंदगी को खुशनुमा बनाया जा सकता है।
● पूजाघर में बांसुरी रखना बहुत शुभ माना जाता है। यदि घर में मछलीघर रखते हैं तो इसे ईशान के समीन रखें।
● शयनकक्ष में बैड के सामने शीशा न रखें। यदि मजबूरी हो तो इसे ढककर रखें।
● घर के मालिक का शयनकक्ष हमेशा दक्षिण या नैऋत्य कोण में होना चाहिए। यदि यह संभव नहीं हो तो उसका बिस्तर नैऋत्य कोण में लगाएं।
● घर में हंसता बच्चा किसे अच्छा नहीं लगता इसीलिए शयनकक्ष में हंसते बच्चे के चित्र लगाएं। ऐसा करना शुभ होता है।
● स्वागत कक्ष में सोफे दरवाजे के एकदम सामने न रखें। यदि आप किसी नकारात्मक ऊर्जा वाली जगह कैसे शमशान आदि से आ रहे हैं तो स्नान करने के बाद ही घर में प्रवेश करें।

तीजन बाई की स्मृतियों को चिरस्थायी बनाएगी राज्य सरकार : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय आज दुर्ग जिले के ग्राम गनियारी पहुंचे, जहां उन्होंने विश्वविख्यात पंडवानी गायिका, पद्मश्री, पद्मभूषण एवं पद्म विभूषण से सम्मानित स्वर्गीय डॉ. तीजन बाई के दशगात्र एवं श्रद्धांजलि सभा में शामिल होकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके पૈतृक गृह ग्राम गनियारी में आयोजित इस शोकसभा में मुख्यमंत्री ने स्व. डॉ. तीजन बाई के तैलचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें सादर नमन किया तथा शोकसंतप्त परिजनों से भेंट कर अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त की। मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर स्व. डॉ. तीजन बाई के पुत्र श्री दिलहरण पारधी तथा परिवार के अन्य सदस्यों से भेंट कर उनका



हलचाल जाना और उन्हें ढांडस बंधाया। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने कहा कि स्व. डॉ. तीजन बाई केवल छत्तीसगढ़ की नहीं, बल्कि पूरे देश की सांस्कृतिक पहचान थीं। उन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा, अद्भुत साधना और पंडवानी की कापालिक शैली के माध्यम से छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति को विश्व

तक पहुंचाकर न केवल छत्तीसगढ़, बल्कि भारतीय लोक संस्कृति को वैश्विक पहचान दिलाई। उनकी कला, साधना और सांस्कृतिक विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

उन्होंने कहा कि राज्योंत्सव के अवसर पर प्रतिवर्ष %६०. तीजन बाई लोककला अलंकरण% प्रदान किया जाएगा, जिसके माध्यम से लोक कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले कलाकारों का सम्मान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि ग्राम गनियारी स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का नामकरण स्व. डॉ.

उन्होंने स्व. डॉ. तीजन बाई के व्यक्तित्व, कृतित्व और लोककला के क्षेत्र में उनके अतुलनीय योगदान पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा में उपस्थित सभी लोगों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की तथा उन्हें सामूहिक श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर पद्मश्री आर.एस. बारले, स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव, विधायक डोमन लाल कोसंबाड़ा, छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम की अध्यक्ष मोना सेन सहित अन्य गणमान्यजन, छत्तीसगढ़ प्रदेश के विभिन्न अंचलों से पहुंचे कलाकार, पंचायत प्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में नागरिकगण उपस्थित थे।

मंत्री राजेश अग्रवाल ने नवीन विधानसभा परिसर में लगाया पौधा

रायपुर। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री राजेश अग्रवाल ने एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत आज नवा रायपुर अटल नगर स्थित नवीन छत्तीसगढ़ विधानसभा परिसर में वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति संवर्धन का संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेशवासियों से अधिक से अधिक पौधे लगाने तथा उनके संरक्षण का संकल्प लेने का आह्वान करते हुए कहा कि वृक्षारोपण केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित और समृद्ध भविष्य के निर्माण की जिम्मेदारी भी है। मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि एक पेड़ माँ के नाम अभियान प्रत्येक नागरिक को अपनी माँ के प्रति सम्मान और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का भाव जागृत करने का प्रेरक

श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में नवा रायपुर को पीपल फॉर पीपल सिटी के रूप में विकसित करने के उद्देश्य से एक लाख पीपल के पौधे लगाने का महत्वाकांक्षी अभियान चलाया जा रहा है। यह पहल पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ जैव विविधता के संवर्धन, स्वच्छ वायु, जलवायु संतुलन और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

वृक्ष हमारे जीवन का आधार हैं। वे हमें शुद्ध वायु, छाया, वर्षा, जैव विविधता और पर्यावरणीय संतुलन प्रदान करते हैं। इसलिए पौधे लगाने के साथ-साथ उनका संरक्षण भी उतना ही आवश्यक है। उन्होंने प्रदेशवासियों से अपील करते हुए कहा कि प्रत्येक परिवार कम से कम एक पौधा अवश्य लगाए।

अतिथि व्याख्याताओं ने मंत्री के बंगले का किया घेराव, वार्ता बेनतीज

रायपुर। राजधानी रायपुर में अतिथि व्याख्याताओं ने 57,700 एकमुश्त मासिक वेतन देने की मांग को लेकर उच्च शिक्षा मंत्री के बंगले का घेराव किया। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात मंत्री टंक राम वर्मा से हुई। व्याख्याताओं का आरोप है कि बिना पूरी बात सुने ही उच्च शिक्षा मंत्री वहां से निकल गए। मंत्री और प्रतिनिधिमंडल की वार्ता बेनतीजा रहने के बाद अतिथि व्याख्याताओं ने बंगले के गेट के पास बैठकर अपना विरोध दर्ज करवाया। आज सुबह 10.30 बजे छत्तीसगढ़ के अतिथि व्याख्याताओं ने 250-300 की संख्या में अपनी मांगों को लेकर उच्च शिक्षा मंत्री टंक राम वर्मा के शंकर नगर स्थित बंगले का घेराव किया। व्याख्याताओं की प्रमुख मांगों में एकमुश्त 57,700 मासिक मानदेय, सेवा सुरक्षा, 12 माह का कार्यकाल, 13 वार्षिक अवकाश सम्मानजनक पदनाम व नीति-2024 में आवश्यक संशोधन शामिल है।

प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात मंत्री टंक राम वर्मा से हुई। बातचीत के दौरान व्याख्याताओं ने 57,700 एकमुश्त मासिक वेतन देने की मांग रखी। प्रतिनिधिमंडल का दावा है कि चर्चा के दौरान मंत्री टंक राम वर्मा व्याख्याताओं को 2,000 प्रतिदिन मानदेय की प्रस्तावित व्यवस्था पर ही अडिग रहे।



प्रतिनिधिमंडल ने मीडिया को बताया कि हमारी एकमुश्त मासिक वेतन की मूल मांग पर कोई स्पष्ट आश्वासन या सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं हुई। प्रतिनिधिमंडल की पूरी बात सुने बिना ही वे वहां से प्रस्थान कर गए, जिससे वहां मौजूद अतिथि व्याख्याताओं में गहरी निराशा व असंतोष व्याप्त हो गया। मंत्री के जाने के बाद अतिथि व्याख्याताओं ने अपनी मांगों के समर्थन में शांतिपूर्ण ढंग से नारे लगाकर विरोध दर्ज कराया।

प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि हमारा संघर्ष किसी व्यक्ति के विरुद्ध नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की उच्च शिक्षा, शिक्षकों के सम्मान और न्यायसंगत सेवा शर्तों के लिए है। जब तक हमारी जायज मांगों पर सार्थक निर्णय नहीं लिया जाता, तब तक हमारा लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक संघर्ष जारी रहेगा।

छत्तीसगढ़/राजधानी

प्रमुख समाचार

राजिम बना नगर पालिका अधिसूचना जारी



रायपुर। राज्य शासन ने राजिमवासियों की बहुप्रतीक्षित मांग पूरी करते हुए राजिम नगर पंचायत का नगर पालिका के रूप में उन्नयन कर दिया है। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग द्वारा इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी गई है। राजिम नगर पंचायत की सीमाएं ही राजिम नगर पालिका की सीमाएं होंगी। राज्य शासन के इस निर्णय से पूरे शहर में खुशी एवं उत्साह का वातावरण है। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव ने राजिम नगर पंचायत के नगर पालिका के रूप में उन्नयन पर कहा कि राज्य शासन के इस निर्णय से राजिम के सुनियोजित विकास को नई दिशा मिलेगी तथा शहरी सुविधाओं के विस्तार के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध होंगे। इससे राजिम में सड़क, नाली, पेयजल, स्वच्छता, स्ट्रीट लाइट, उद्यान, सामुदायिक भवन सहित विभिन्न आधारभूत सुविधाओं के विकास को और ज्यादा गति मिलेगी। साथ ही राज्य और केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ भी अधिक प्रभावी ढंग से नगरवासियों तक पहुंचेगा।

मुख्यमंत्री हेल्पलाइन से सुलझी बुजुर्ग की पेंशन की समस्या

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में संचालित मुख्यमंत्री हेल्पलाइन आमजन की समस्याओं के त्वरित एवं प्रभावी निराकरण का सशक्त माध्यम बनकर उभर रही है। हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के समयबद्ध निराकरण से प्रदेशभर में पात्र हितग्राहियों को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ शीघ्रता से मिल रहा है। इसी क्रम में बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के ग्राम जरहाडीह निवासी श्री धुरन प्रजापति को 6-7 माह से लंबित सामाजिक सहायता पेंशन की राशि प्राप्त हुई। उनके पुत्र श्री अंकज कुमार प्रजापति ने मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में शिकायत दर्ज कराई थी कि उनके पिता को सामाजिक सहायता

पेंशन का लाभ नहीं मिल रहा है। शिकायत प्राप्त होने के बाद संबंधित विभाग ने प्रकरण की जांच की। जांच में पाया गया कि हितग्राही के बैंक खाते से जुड़ी तकनीकी समस्या के कारण पिछले 6-7 माह से पेंशन राशि का भुगतान नहीं हो पा रहा था। मामले को प्राथमिकता से लेते हुए संबंधित विभाग ने बैंक खाते से जुड़ी समस्या का निराकरण कराया, जिसके बाद जून 2026 तक की लंबित सामाजिक सहायता पेंशन की पूरी राशि डीबीटी के माध्यम से हितग्राही के बैंक खाते में अंतरित कर दी गई।

राज्यभर के विद्यालयों में बाल संरक्षण एवं सुरक्षा के प्रति बढ़ाई जा रही जागरूकता

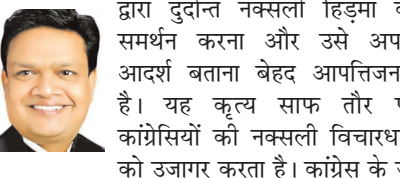


रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में प्रदेश में बच्चों के सुरक्षित, सम्मानजनक एवं अधिकार-संपन्न बचपन के निर्माण की दिशा में विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा मिशन वात्सल्य के अंतर्गत राज्य के विद्यालयों में छात्र-छात्राओं एवं किशोर-किशोरियों को बाल संरक्षण, व्यक्तिगत सुरक्षा, कानूनी अधिकार तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े के मार्गदर्शन में आयोजित इन कार्यक्रमों में मिशन वात्सल्य, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, वन स्टॉप सेंटर तथा पुलिस विभाग के अधिकारी विद्यार्थियों को पाँक्सो अधिनियम के प्रमुख प्रावधानों, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 की उपयोगिता, गुड टच एवं बैड टच की पहचान, व्यक्तिगत सुरक्षा तथा किसी भी प्रकार के शोषण अथवा अनुचित व्यवहार की स्थिति में तत्काल सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दे रहे हैं।

हिड़मा का समर्थन कांग्रेसियों की नक्सली विचारधारा का परिचायक : देवलाल

रायपुर। कांग्रेस पार्टी पर तीखा हमला बोलते हुए भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता देवलाल ठाकुर ने उनके नेताओं की मानसिकता पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। ठाकुर ने कहा कि कांग्रेसियों द्वारा दुर्दान्त नक्सली हिड़मा का समर्थन करना और उसे अपना अस्त्र बनाता बेहद आपत्तिजनक रहे हैं, उनके इस कृत्य से आज स्वर्ग में नंदकुमार पटेल, महेंद्र कर्मा और विद्याचरण शुक्ल जैसी महान विभूतियों की आत्माएँ भी रो रही होंगी और अफसोस कर रही होंगी कि वे जीवनभर किस पार्टी में रहे, जिसके नेता आज नक्सलियों के गुगुणगन कर रहे हैं। ठाकुर ने कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज से सीधे सवाल पूछा कि क्या बैज हिड़मा का समर्थन करने वाले अपने विधायक अटल श्रीवास्तव को स्पष्टीकरण के लिए नोटिस जारी करेंगे? अगर कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा इस मामले में कोई नोटिस जारी नहीं किया जाता है, तो जनमानस में यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाएगा कि कांग्रेस के अध्यक्ष और कांग्रेस के लोग पूरी तरह से नक्सली विचारधारा के साथ हैं।



विधायक आज नक्सली हिड़मा का समर्थन कर रहे हैं, उनके इस कृत्य से आज स्वर्ग में नंदकुमार पटेल, महेंद्र कर्मा और विद्याचरण शुक्ल जैसी महान विभूतियों की आत्माएँ भी रो रही होंगी और अफसोस कर रही होंगी कि वे जीवनभर किस पार्टी में रहे, जिसके नेता आज नक्सलियों के गुगुणगन कर रहे हैं। ठाकुर ने कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज से सीधे सवाल पूछा कि क्या बैज हिड़मा का समर्थन करने वाले अपने विधायक अटल श्रीवास्तव को स्पष्टीकरण के लिए नोटिस जारी करेंगे? अगर कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा इस मामले में कोई नोटिस जारी नहीं किया जाता है, तो जनमानस में यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाएगा कि कांग्रेस के अध्यक्ष और कांग्रेस के लोग पूरी तरह से नक्सली विचारधारा के साथ हैं।

सड़क सुरक्षा नियमों के उल्लंघन पर बड़ी कार्रवाई

रायपुर। सड़क सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए रायगढ़ जिला प्रशासन ने आज राजमार्गों पर अवैध अतिक्रमण और बेतरतीब पार्किंग के खिलाफ व्यापक संयुक्त अभियान चलाया। सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों तथा सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुरूप गठित जिला राजमार्ग सुरक्षा टास्क फोर्स ने शहर के प्रमुख यातायात क्षेत्रों में सघन प्रवर्तन अभियान चलाते हुए राजमार्गों से अतिक्रमण हटाए और नियमों का उल्लंघन करने वाले 41 से अधिक वाहनों पर लगभग 41 हजार रुपए का जुर्माना लगाया। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी मयंक चतुर्वेदी तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शशिमोहन सिंह के निर्देशनों में यह अभियान कांशोराम चौक, छातामुड़ा चौक तथा अन्य व्यस्त मार्गों पर संचालित किया गया। अभियान के दौरान एडीएम श्री अपूर्व प्रियेश टोप्पो, एसडीएम महेश शर्मा, उप पुलिस अधीक्षक , तहसीलदार, अनुविभागीय अधिकारी तथा जिला परिवहन अधिकारी सहित विभिन्न विभागों की संयुक्त टीम ने मैदानी स्तर पर कार्रवाई की। संयुक्त टीम ने राष्ट्रीय राजमार्ग के राइट ऑफ वे क्षेत्र में किए गए अवैध अतिक्रमणों को तत्काल हटाया। दुकानों के सामने किए गए सड़क विस्तार, अस्थायी शेड, अवैध निर्माण तथा अन्य बाधाओं को हटाने हुए संबंधित लोगों को भविष्य में दोबारा अतिक्रमण नहीं करने की सख्त चेतावनी दी गई।

लैटियों के हुनर ने जीता जनप्रतिनिधियों का दिल

अबूझमाड़ का स्वाद पहुँचा विधानसभा- अरक चावल की महक से

रायपुर। अरक (अथवा अरवा) चावल बिना उबाले (कच्चे) धान से तैयार किया गया चावल है। यह अपनी प्राकृतिक सुगंध, खिले हुए दानों और पोषक तत्वों के लिए जाना जाता है। पारंपरिक खेती के तरीकों से उगाए जाने वाले इन चावलों में एक खास सुगंध होती है जो पकने के दौरान पूरी रसों को महका देती है।

नारायणपुर के घने जंगलों और दुर्गम पहाड़ियों के बीच बसी अबूझमाड़ की सदियों पुरानी पाक संस्कृति ने आज छत्तीसगढ़ विधानसभा के गलियारों में अपनी अनूठी छाप छोड़ी। विधानसभा परिसर में आयोजित एक विशेष खाद्य प्रदर्शनी में जब जनप्रतिनिधियों के सामने अबूझमाड़ के पारंपरिक और स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन परोसे गए, तो हर कोई इस समृद्ध विरासत का मुरोद हो गया। यह आयोजन केवल व्यंजनों का प्रदर्शन मात्र नहीं था, बल्कि नारायणपुर की जनजातीय संस्कृति,



स्थानीय कृषि उत्पादों और महिला सशक्तिकरण की एक शानदार सफलता की कहानी है।

अरक चावल- अनमोल विरासत

इस विशेष आयोजन में सबसे बड़ा आकर्षण रहा अबूझमाड़ का पारंपरिक अरक चावलशर। हल्के पीले रंग और अपनी भीनी-भीनी प्राकृतिक खुशबू के लिए पहचाने जाने वाले इस चावल से बनी खीर ने विधानसभा

में मौजूद सभी मंत्रियों, विधायकों और अतिथियों का दिल जीत लिया। इस खीर का स्वाद चखने के बाद जनप्रतिनिधियों ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की और इसे छत्तीसगढ़ की एक अनमोल और दुर्लभ खाद्य धरोहर बताया।

सामूहिक प्रयासों से मिली पहचान

अबूझमाड़ के इन पारंपरिक स्वादों को सुदूर अंचलों से निकालकर राज्य के शीर्ष सदन तक पहुंचाने का यह सफर आसान नहीं

था। इस पूरी पहल को धरातल पर उतारने में महत्वपूर्ण भूमिका रही। ?वन मंत्री श्री केदार कश्यप और नारायणपुर कलेक्टर, जिनके मार्गदर्शन और दूरदर्शी प्रयासों ने इस आयोजन को एक बड़े मंच पर स्थापित किया।

इस आयोजन ने छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को तो प्रदर्शित किया ही है, साथ ही स्थानीय महिलाओं के कौशल और आत्मनिर्भरता को भी एक नया आयाम दिया है। स्व-सहायता समूह की दीदीयों ने अपनी कड़ी मेहनत से साबित कर दिखाया कि यदि सही मंच मिले, तो वनांचल के पारंपरिक ज्ञान को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सराहा जा सकता है। ?अबूझमाड़ की पाक परंपरा केवल भोजन नहीं, बल्कि हमारी जीवनशैली और प्रकृति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। विधानसभा में मिला यह सम्मान हमारे पारंपरिक कृषि उत्पादों और स्थानीय महिलाओं की आत्मनिर्भरता को एक नई दिशा देगा।

डॉ. ममता साहू ने संभाली छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की कमान



महिलाओं के अधिकारों की रक्षा, त्वरित न्याय और सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का संकल्प

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नियुक्त डॉ. ममता साहू ने मंगलवार को छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष के रूप में विधिवत पदभार ग्रहण किया। शास्त्री चौक स्थित राज्य महिला आयोग कार्यालय में आयोजित गरिमामय कार्यक्रम में उन्होंने कार्यभार संभालते हुए महिलाओं के अधिकारों के संरक्षण, उनकी समस्याओं के त्वरित निराकरण तथा महिला सशक्तिकरण के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया।

पदभार ग्रहण करने के बाद डॉ. ममता साहू ने आयोग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से परिचय प्राप्त किया और सभी से समर्पण, पारदर्शिता तथा संवेदनशीलता के साथ कार्य करने की अपेक्षा की। उन्होंने आयोग के विभिन्न कक्षों का निरीक्षण कर कार्यालयीन व्यवस्थाओं का अवलोकन भी किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि

छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग महिलाओं को न्याय दिलाने, उनकी शिकायतों के प्रभावी एवं समयबद्ध निराकरण तथा उनके सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए पूरी संवेदनशीलता और जवाबदेही के साथ कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि आयोग महिलाओं के हितों से जुड़े मामलों में सक्रिय भूमिका निभाते हुए उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास करेगा। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती शालिनी राजपूत, राज्य महिला आयोग की सदस्य श्रीमती सरला कोसरिया, नगर निगम रायपुर के पार्षद महेश ध्रुव, दुर्गेश राव, श्रीमती रजनी शेंगेडे, जितेन्द्र साहू, कृष्णा साहू, श्रीमती सीमा डहरिया, गीतेश साहू सहित आयोग के सचिव, सहायक संचालक, लेखाधिकारी एवं अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

विघटित परिवहन निगम के दिवंगत कर्मचारियों के आश्रित सदस्य को मिलेगी अनुकम्पा नियुक्ति

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा अधोसंरचना विकास निगम के अंतर्गत आने वाले विघटित परिवहन निगम के दिवंगत कर्मचारियों के आश्रितों को अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान



करने हेतु नई नीति बनाने का निर्णय लिया गया है। इस संबंध में सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग की अध्यक्षता में 07 सदस्यीय अंतर्विभागीय समिति का गठन किया गया है। सामान्य प्रशासन विभाग ने आदेश जारी किया है। सामान्य प्रशासन विभाग के अनुसार, पूर्व में दिवंगत कर्मचारियों के आश्रितों को शिक्षाकर्म वर्ग-तीन के पद पर अनुकम्पा नियुक्ति दी जाती थी। शिक्षाकर्म पद समाप्त होने के बाद जल संसाधन विभाग ने 13 दिसंबर 2022 को आदेश जारी कर सीआईडीसी के तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के रिक्त पदों पर नियुक्ति का प्रावधान किया था। लेकिन सीआईडीसी में पद रिक्त नहीं होने के कारण कई प्रकरण लंबित हो गए थे। उच्च न्यायालय के निर्देश और कर्मचारी हित को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने नई नीति बनाने का निर्णय लिया गया। समिति को एक माह के भीतर रिपोर्ट शासन को सौंपनी होगी। रिपोर्ट पर मंत्रि-परिषद् से अनुमोदन लेकर नई नीति अधिसूचित की जाएगी। राज्य शासन का उद्देश्य है कि दिवंगत कर्मचारियों के आश्रितों को आर्थिक संकट का सामना न करना पड़े और उन्हें जल्द अनुकम्पा नियुक्ति का लाभ मिले।